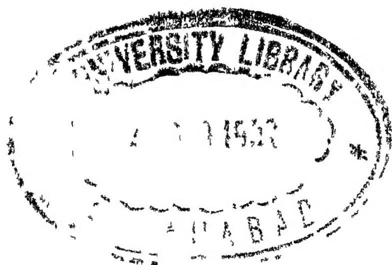
कला के लिए

लेखक

भार्गवराम विट्ठल वरेरकर

अनुवादक

र० श० केलकर, एम० ए०



१९५७
आत्माराम एण्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
काश्मीरी गेट
दिल्ली-६

प्रकाशक
रामलाल पुरी
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

लेखक के अन्य नाटक

अ-पूर्व बगाल	सिहापुर से
भूमि कन्या सीता	सारस्वत
कला के लिए	यही वर का बाप
	सन्यासी का ससार
प्रेस मे	मजदूरो का राज
द्वारकाधीश	जिवा-शिवा
दासता के अधिकारी	प्रलय का लय
स्वय-सेवक	कोरी करामात

मुद्रक
श्यामकुमार गर्ग
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
क्वीन्स रोड, दिल्ली

मूल्य १।)

भूमिका

सामाजिक जीवन की अनेक धाराओ पर कई नाटककारो ने अनेक बार प्रहार किए, प्रकाश डाला, तरफदारी की या प्रवाह मे बह गए पर चित्रकला को जो सामाजिक जीवन की महत्त्वपूर्ण धारा है, अभी तक किसी ने नही छूआ था। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि कोई मँजा हुआ नाटककार इस विषय को लेकर कला एव समाज पर सीधा प्रकाश डाले। मेरी इस कई वर्ष पुरानी इच्छा को सौभाग्य से स्वाभिमानी सुप्रसिद्ध नाटककार श्री मामा वरेरकर ने अपनी निजी प्रेरणा से 'कला के लिए' नाटक लिखकर पूरा किया जिसके लिए उन्हे धन्यवाद देना मै अपना प्रथम कर्त्तव्य समझता हूँ।

इस व्यापारी ससार मे कलाकार की कला और उसके जीवन का जो मारवाडी सौदा हो रहा है उससे समाज परिचित नही। इतना ही नही, कलाकार भी थोडे ही परिचित हैं। श्रेष्ठ और स्वतत्र कलाकृति के निर्माण के लिए कलाकार सर्वथा असमर्थ होने के कारण अपात्र साबित हुआ है। कलाकृति का मूल्य बाजार में क्या होगा इस अतर्निहित हेतु के परे कलाकार का मन और हाथ नही पहुँचता, कारण एक ही है— प्रत्येक व्यक्ति दुनियादारबनकर रहना चाहता है, सामान्य जनता के सामाजिक बधनो द्वारा ठहरायी हुई प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है। कलाकार की पृष्ठिभूमि, स्वभाव तथा ध्येय परे रखकर, कृत्रिम जीवन के फेरे मे पडकर, केवल उदरपालन के परे वह नही जा सकता। और इस तरह वह स्वय व्यापारी दुनिया की एक इकाई बन जाता है। सच्चा कलाकार समाज का पथप्रदर्शक होता है। समाज उसका पथप्रदर्शक नही बन सकता, इस सत्य को मामासाहब ने सुन्दरराव के चरित्र द्वारा स्पष्ट किया है।

सुन्दरराव के चित्र प्रदर्शन—समिति ने ठुकरा दिए—ऐसी घटनाओ

से कलाकार भली भाँति परिचित है। सच्ची कला सस्थाओ की प्रदर्शनियाँ व्यापारी कला के लिए नही होनी चाहिए। व्यापारियो ने आयोजित की हुई प्रदर्शनियो मे व्यापारी कला का समावेश योग्य है पर उच्च कला की विशेषताएँ व्यक्त करने मे कौन सा कलाकार श्रेष्ठ है यह बात जनता की नज़रो के सामने लाना कला-सस्थाओ का कर्त्तव्य होना चाहिए। पर दुर्भाग्य से कला सस्थाओ एव कलाकारो की व्यापारी प्रवृत्ति दिन पर दिन दृढतर होने के कारण ऐसी जगह श्रेष्ठ कला दबोची जाने की सम्भावना हो सकती है। सुन्दरराव मदा से कहता है, 'मेरे यहाँ तुम सीखने न आओ। सरकारी कला मदिर में जाओ'। तब मदा कहती है, 'कला मदिर मे जाकर मुझे ड्राइग मास्टर नही बनना है।' उस लडकी का यह उत्तर अत्यत समुचित है। आज की सच्ची वस्तुस्थिति भी यही है। सरकारी कला मदिरो मे कलाकार बनने योग्य शिक्षा मिल ही नही सकती। सरकारी कला शिक्षक सस्था तो इस समय पूर्णरूप से व्यापारी कला का शिकार बनी हुई है। रोजी कमाने वाले कलाकार बनाने का वह एक कारखाना मात्र बन गई है। उच्च कला, राष्ट्रीय भावना एव स्वतत्र विचारो का गला घोटने का वहाँ जान-बूझकर प्रयत्न किया जा रहा है। इसका कारण एक ही है—सरकार उस सस्था को भारतीय कलाकारो के नियत्रण मे नही जाने देती। विदेशियो की देखरेख में दी जाने वाली शिक्षा गुलामी-वृत्ति के कलाकार पैदा करने के अतिरिक्त और कुछ भी नही कर सकती। यह बात मदा के "ड्राइग मास्टर नही बनना है मुझे!" एक ही उत्तर ने स्पष्ट कर दी है।

स्त्री और पुरुष का भेद-भाव किस प्रकार मनुष्यता के रास्ते मे आता है यह बात रजनी से कहलवा कर मामासाहब ने सुन्दरराव की बडी अच्छी तरह से आँखे खोली है। आँखे खुलते ही 'आदि मानव' की कल्पना सुन्दरराव के मस्तिष्क मे आई और तब उसने सीग दाढी मूछ स्तन और पूँछ वाले आदमी का निर्माण किया। 'मनुष्य' सज्ञा के पात्र मनुष्य के मुख्य गुण एकत्र करके उसे प्रतीकात्मक आकार देकर सुन्दर-

राव ने जो चित्र बनाया वह ऊँची कला का द्योतक सिद्ध होता है। प्रतीकात्मक पद्धति हमारी भारतीय कला की विशेषता है। हम कलाकारो को पाश्चात्य कला शिक्षा के कारण आँखो को दिखलाई देने वाले विसर्ग का अनुकरण करने के अतिरिक्त कुछ नही दिखाई देता। हम कलाकारो का बौद्धिक सामर्थ्य नष्ट कर दिया गया है। और इसीलिए सुन्दरराव का 'मनुष्य' उच्च कला मे से एक है यह बात बहुत ही थोडे कलाकारो को जँचेगी। साधारण जनता तो उसे पागलपन ही समझेगी। इसमे सदेह नही कि ऐसी घटनाएँ रगभूमि द्वारा जितनी अधिक तादाद में जनता के सामने आएँ उतनी लोक शिक्षा मे मदद होगी।

कला के सच्चे ससार को छोडकर समाज मान्य ससार स्वीकारना कलाकार के लिए दो पत्नियो का पति बनने की भाँति है। कलाकार अपनी कला के साथ जन्म से ही विवाहित रहता है। इसके उपरान्त समाज मे विश्वास एव नाम-ख्याति पाने के लिए विवाह करके दुनियादार की भाँति घर बसाना अपने आप को उच्च कला निर्माण के लिए नालायक बना लेना है। 'कला के लिए' नाटक मे इस सत्य पर प्रकाश डाला गया है। कला को एकमात्र पत्नी और कला कृति को परिवार समझकर जो कलाकार अपने आप को समर्पण कर दे वही सच्ची कला का निर्माण कर सकता है। ऐसे कलाकार जब आगे आएँगे तभी कला के विकास की आशा की जा सकती है। मेरे कहने का अभिप्राय यह नही कि इस प्रकार दो पत्नियो के स्वामित्व के कारण उच्च कला कृति का निर्माण एकदम असम्भव है, पर वह कठिन अवश्य है। ऐसा कलाकार सौ मे एक भी मिल सकेगा इसमें सन्देह है। यदि कोई बिरला हुआ भी तो उसके जीवन का आठवाँ हिस्सा भी कला के हिस्से नही पडता। कलाकार कोई साधारण व्यक्ति नही होता। अत असाधारण व्यक्ति की तुलना सधारण के जीवन से नही की जा सकती।

हमारी गुलामी की प्रवृत्ति इतनी अधिक बढ गई है कि कोई भी कलाकार अपनी कला की महत्ता समाज को समझाते समय किसी रही

युरोपियन के सर्टिफिकेट का अथवा सिफारिश का रस भरा वर्णन किए बिना, उसे नहीं समझता। यही बात समाज को भी लागू है। यह जानने के लिए कि कोई कलाकार छोटा है या बडा है युरोपियनो की सलाह लिऐ बिना समाज का भी समाधान नही होता। लोग कलाकार की दाद तभी देगे यदि कलाकार युरोप हो आया हो और दो-चार समाचार-पत्रो मे उस के बारे मे कुछ पक्तियाँ उन्होने पढी हो। विदेशी उपाधि तो कलाकार का बहुमूल्य हथियार बन गई है। और समाज कलाकार की उपाधि को ही उस की कला समझता है। प्रसगानुसार F R. S A. की उपाधि के सम्बन्ध मे जनता और कलाकार मे कितनी गलतफहमी फैली हुई है उस बात को प्रसगानुसार इस नाटक मे भलीभाँति दिखाया गया है। रॉयल सोसायटी ऑफ आर्टस (लदन) के बारे मे अभी भी कई कलाकरो को गलतफहमी है। कई भोले कलाकार उस सोसायटी का फेलो बनना बडे सम्मान की बात समझते हैं। पर सच बात तो यह है कि जितना आसान और सम्मानपूर्ण बाम्बे आर्ट सोसायटी तथा आर्ट सोसायटी ऑफ इडिया सस्थाओ का सदस्य बनना है उससे अधिक रॉयल सोसायटी ऑफ आर्ट का सदस्य बनना नही। कल यदि बाम्बे आर्ट सोसायटी एम० बी०एस० की उपाधि या आर्ट सोसायटी ऑफ इडिया एम० ए०एस०आई की उपाधि २५ रु०फीस लेकर देने लगे तो ये एफ० आर० ए०एस०के शौकीन फीस देने के लिए तैयार भी होंगे या नही इस मे सदेह है। तीन गिन्नियाँ, मुतवातिर प्रयत्न करके, वहाँ देगे पर २५ रु० प्रार्थना करने पर भी यहाँ नही देगे। हमारी इसी दुर्बल प्रवृत्ति पर "कृष्णा डेमा रामगडा फेलो ऑफ रॉयल सोसायटी ऑफ आर्टस" नामक नौकर पात्र द्वारा अच्छी तरह प्रकाश डाला गया है।

मामासाहब के 'कला के लिए' नाटक का सार है कि जन्मजात कलाकार गुलामी, परपरा, अनुकरण, प्रतिष्ठा तथा कृत्रिम प्रेमपाश आदि रोगो से सर्वथा मुक्त रहता है और अपनी स्वतत्र कला पर अपना सारा जीवन लगा देता है। नाटक का कथानक यथार्थवादी होने के कारण

मुझे विश्वास है कि विचारशील कलाकार का उससे समाधान होगा ।

मामा साहब ने कला का सैद्धान्तिक एव व्यवहारिक अध्ययन अच्छा किया है यह बात इस नाटक मे सिद्ध होती है । कला के क्षेत्र मे नाटककार के नाते मामा ने जो अपनी हाजिरी लगाई है उसके लिए मैं मामा का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ ।

बम्बई—ताडदेव वि० पां० करमरकर

कृपया ठीक करले

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	२४	ने है	ने कहा है
१७	२६	य ।दन	ये दिन
१९	११	नही जलता	नही जलता
२७	१	स्डटै	स्टैंड

प्रस्तावना

यह नाटक अगस्त, १९३९ मे लिखा गया है। इस नाटक का अभिनय होना था। आर्ट सोसायटी ऑफ इन्डिया के लिए तथा उसीकी ओर से होना था। उस समय बम्बई के प्रमुख आर्टिस्ट स्त्री-पुरुष इस नाटक का अभिनय करने वाले थे तथा श्री आलतेकर जी की देखरेख में चित्रकार हलदरणकर के स्टूडियो में इसकी रिहर्सल भी आरम्भ हो गई थी। पर समय अनुकूल न होने के कारण उस समय यह नाटक रगभूमि पर न आ सका तथापि यह नाटक लिखा जाने का पूरा श्रेय आर्ट सोसायटी के प्रमुख सदस्य श्री नानासाहब करमरकर तथा तात्यासाहब डोगरे को है।

तीन साल पश्चात् आज इस नाटक का प्रयोग रगमच पर हो रहा है तथा प्रयोग द्वारा 'लिट्ल् थिएटर' सस्था का प्रथमोद्घाटन हो रहा है जिसका श्रेय नेशनल थिएटर अकादमी के रजिस्ट्रार पार्श्वनाथ आलतेकर तथा उनके विद्यार्थियो एव विद्यार्थिनियो को ही है।

हाजीकासम वाडी,
बम्बई।
ता० ३ सेप्टेंबर १९४२

भा० वि० वरेरकर

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

सुन्दर	कलाकार
बाबूराव	रजनी का पति
बलवन्तराव	रमणी का पति
विश्वासराव	पुराने जमाने का कलाकार
कृष्णा	सुन्दर का नौकर
कवि	
ऑथर	
नट	

स्त्री पात्र

कल्याणी	सुन्दर की प्रेयसी
रमणी	: सुन्दर की बहन तथा बलवन्तराव की पत्नी
रजनी	: सुन्दर की शिष्या तथा बाबूराव की पत्नी
कुंदा, मदा	सुन्दर की शिष्याएँ

कला के लिए

पहला अंक

[सुन्दरराव का स्टूडियो. सर्वसामान्य किसी भी आर्टिस्ट के स्टूडियो की भाँति . जगह-जगह पर पूर्ण-अपूर्ण चित्र लटके हुए हैं अथवा स्टैंड पर रक्खे हैं . विद्यार्थियों के बैठने के लिये, 'डान्की, चौकियाँ... कहीं-कहीं कुर्सियाँ अस्तव्यस्त ढंग से रक्खी हुई है...एक कोच, स्टूल... जमीन पर कागज के टुकड़े तथा कागज के गोले पड़े हुए.. एक कोने में एक रेडियो सेट है। परदा उठते समय वहाँ कोई नही है। रेडियो बज रहा है। क्षण भर में रजनी प्रवेश करती है। रजनी सुन्दरराव की एक विद्यार्थिनी है। उसका लिवास आजकल की किसी भी विद्यार्थिनी की भाँति है पर उसमें बनाव शृंगार नहीं है...मुखाकृति गंभीर है ..असमय प्रौढ़ता पाई हुई एक प्रौढ लड़की.. इधर-उधर दरवाजों में झाँकती है और 'कृष्णा-कृष्णा' कह कर पुकारती है। किसी से उत्तर न पाकर 'शायद घर में कोई भी नही है', (स्वगत) बड़बड़ाती हुई रेडियो के पास रेडियो सुनती खड़ी रहती है। तभी रमणी प्रवेश करती है और चौंक कर दरवाजे के पास ठहर जाती है...रमणी सुन्दरराव की बहिन है। लिवास किसी भी खानदानी गृहणी के समान है . .बातचीत में इतराई हुई . आयु में अधिक दिखाई देती हुई भी लड़कपन से युक्त एक आधुनिक गृहिणी. . .।]

रमणी—कौन ! रजनी ? आज इधर कहाँ ?

रजनी—देखने आई थी ।

रमणी—किसे ? अब तो तुम्हे किसी को देखने की आवश्यकता नही !

रजनी—नही, जिन्होने पहने पहल मुझे देखा, उन्ही को देखने आई थी। कहा था सुन्दरराव के यहाँ जा रहा हूँ ।

रमणी—किसने ? बाबूराव नें ?

रजनी—हाँ। सोचा आज उन्हे यह उमग कैसे आई ? सुन्दरराव के नाम से जो आग-बबूला हो उठते थे उनमे सुन्दरराव के प्रति इतनी प्रेमार्द्रता कैसे उमड आई यही देखने मै यहाँ आई थी। पर यहाँ कोई हो भी ?

रमणी—मुझे लगता है दादा अभी आ जायगा, शायद प्रदर्शनी मे गया है। आज चुनाव होना है न चित्रो का !

रजनी—शायद सिफारिश लडाने गए हैं ?

रमणी—दादा और शिफारिश ? ऐसा न कहो। प्राण जाने पर भी वह किसी के सामने हाथ नही फैलायेगा।

रजनी—चुनाव क्या हुआ है देखने गए होगे .वैसे मुझे ठीक-ठीक पता नही। मैने केवल अन्दाज से कहा है।...कुछ समझ मे नही आता आजकल उन्हे हो क्या गया है। कल्याणी से भी वे आजकल नही मिलते।

रमणी—वही कह रही होगी शायद ?...उसकी क्या सुनती हो ? अमीर की बेटी है ! स्वय ही भटकती रहती होगी कही और कहती होगी वह नही मिलता। मुझ विश्वास नहीं होता। सुन्दरराव और कल्याणी को न मिले !

रजनी—अच्छा और शायद बलवन्तराव प्रदर्शनी मे नही गए हैं ? चित्र भेजे हैं न ?

रमणी—ऊँह ! उन्हे उसकी तनिक भी चिन्ता नही। जो पुरस्कार और पदक मिलने चाहिए थे, उन्होने प्राप्त कर लिए है। अब तो अपने चित्र भेजने होते हैं इस लिए भेजते है बस। पर हाँ ..तुमने कितने चित्र भेजे है ?

रजनी—ऊँह मेरा क्या स्त्रियो के चित्रो को कौन महत्त्व देता है ?

रमणी—पुरुषो से पूछो। वे कहते है आजकल तुम औरते आडी आती हो उनके पुरस्कारो मे! चित्र खराब होने पर भी उसे बनाने वाली सुन्दर होनी चाहिए पुरस्कार निश्चित है!

रजनी—बडी दुष्ट हो तुम! उनसे कहो चित्रकार बनने के लिए अभी तुम लोगो को काफी समय लगेगा।

रमणी—तो कितने चित्र भेजे है तुमने ?

रजनी—बहुत सारे भेजे है...पर देखना है उनमे से लगाते कितने है। वैसे मुझे इसकी परवाह नही पर इनका प्राण छटपटाता रहता है न ? समझते है जैसे उन्ही का चित्र है ऐसे ही यदि कोई मेरे चित्र को बुरा कह दे तो झगड पडते है ।

रमणी—भाग्यवान हो!

रजनी—कैसा भाग्य ले बैठी हो ? जो वे मेरी तारीफ करते है तुम समझती हो वह मेरे लिए करते है ? अरी मै सुनती हूँ . किसी दूसरे से कहते रहते है जैसे उन्ही की कल्पनाएँ हो। जैसे मै केवल चितेरी हूँ । मेरा हाथ अपने हाथ मे पकड कर चित्र निकलवाता हूँ ऐसा नही कहते, यही मेरा भाग्य है।

रमणी—सच ?

रजनी—आज प्रथम बार दौडे गए है उस हेगिंग कमेटी के पास । मैंने कितना कहा कि न जाओ . लेकिन नही. .दूसरो के सामने नाक रगडने की आदत है न उन्हे ? न मिले पुरस्कार और पदक—क्या चाटना है उन पदको को ? और पुरस्कार क्या है ? छ सौ रुपये। ह·! भिखमगे कही के!

रमणी—तुम समझती हो घर मे विपुलता है! पर कितने लोगो की आँखे लगी होती है इन छ सौ पर। जन्म भर का इन्तजाम हुआ सा लगता है उन्हे।

रजनी—ठीक है...पर मैं कहती हूँ इनको क्या गरज है इस झमेले से?

रमणी—पुरुष का जी—छटपटाता है न पत्नी के कल्याण के लिए ? हम स्त्रियाँ वह नही समझ सकती—(**विश्वासराव आता है । पुराने जमाने का एक आर्टिस्ट—आयु लगभग ५५ साल—पगड़ी बाँधने वाला—उपरना डाले हुए—बात करते समय कन्धे उचकाने की आदत .. हाथ में हमेशा एक छाता .**) आइए विश्वासराव, दादा कहाँ हैं ?

विश्वास—सुन्दर न ? दिखाई नही दिया वहाँ...अच्छा हुआ वह नही गया ।

रजनी—क्यो ? क्या हुआ ?

विश्वास—और क्या होता ? गत वर्ष की पुनरावृत्ति !

रमणी—क्या उनके सारे चित्र निकाल फेके ?

विश्वास—हठ है यह...हठ ! जवानी का खून...खौलता है । लगता है कि मैं संसार में उथल-पुथल कर दूँगा । ऊं, हु ! हमारी कौन सुनता है ? बुड्ढे लोग हम...नौजवान समझते हैं कि हम मदबुद्धि हो गए हैं । नही ऊ, हु !

रजनी—क्या हुआ ? वृद्धो ने क्या गुनाह किया ?

विश्वास—वृद्धो ने नही...नवयुवको ने । क्या हैं वे चित्र ! कभी देखे थे किसी ने ऐसे चित्र ! अरे क्या ससार मे कही सौन्दर्य है ही नही ! घूरा क्यो टटोलते हैं ये छोकरे ? लोग क्या मूर्ख हैं घूरा देखने के लिए ?

रमणी—हुआ क्या, साफ-साफ बतायेंगे ? क्षमा कीजिएगा.. मेरी बहन का हृदय छटपटा रहा है इसलिये पूछा । क्या हुआ ?

विश्वास—होना क्या था ? फेक दिए चित्र ।

रमणी—दादा के चित्र ? एक भी न चुना ?

विश्वास—एक भी अच्छा न था. .फिर भला कोई कैसे चुनता ?

रजनी—और मेरे ?

विश्वास—सब पास ! सर्वसम्मति से ! (**रमणी से**) अपने दादा से कहो इससे बुद्धि लो । मै कहता हूँ शाबास बाबूराव ।

रजनी—(रमणी से) सुन लो ।

विश्वास—क्या ?

रजनी—नही मैने कहा सुन्दरराव का कोई पति होता तो ऐसा न हुआ होता ।

विश्वास—पति या पत्नी ?

रमणी—पत्नी विचारी क्या करती ! गूंगा जानवर । दिए दान की और दिए अन्न की मालकिन ।

विश्वास—पर मालकिन तो है न ?

रजनी—मालिक की पत्नी होने के नाते । अब यह रमणी है...चित्रकार की पत्नी—क्या इसलिए यह चित्रकार कहलाएगी ?

विश्वास—तुम स्त्रियाँ बडी असन्तुष्ट होती हो । किसी भी तरह तुम को संतोष नहीं होता । स्वतत्र छोड दी जाओ तो कहती हो कि हमारी कोई चिन्ता नही करता और तनिक भी अधिकार जताया जाय तो आफत मचा देती हो । लेकिन तुम्हारा ठीक है रजनी ..बाबूराव सा पति पाने के लिए भाग्य चाहिए ।

रजनी—सुन लो रमणी ।

विश्वास—क्यो ?

रमणी—पहेली है यह विश्वासराव ।

विश्वास—मैंने तीन विवाह किए हैं अब तक . लेकिन अपने राम के सामने कभी ऐसी पहेली पैदा नही हुई । यह ठीक है कि मेरी पत्नियों में कोई आर्टिस्ट नही थी । तीन विवाह करने के उपरान्त भी अब इस बुढापे में फकीर बन कर रहना आ पड़ा है मेरे भाग्य में ..और तुम हो जो इस प्रकार झगडती रहती हो ?

रमणी—कौन झगड़ता है ?

रजनी—कौन किससे झगडता है ?

विश्वास—तुम स्त्रिया . रोज झगडती हो ..पतियो से, अरे हम पुरुष इक्ठा होने पर यही बाते करते हैं या नही ?

रजनी—आपके पास उतना ही सत्ता का खेल होता है–न खेलने के लिए ।

रमणी—शायद और विषय नही होते आप लोगो के पास ?

विश्वास—सुहावना विषय यही होता है। अरी यदि हम चित्रकार औरतो के बारे मे बाते न करे तो और करे कौन ? स्त्रियो के कारण ही तो हमारी कला जीवित है ।

रजनी—सच है—

विश्वास—सच तो है ही । स्त्रियो के चित्रों के अतिरिक्त और चित्रो को बाजार में भाव है ही कहाँ ?

रजनी—क्या इसलिए हमारी विडम्बना करते हैं ? –

विश्वास—विडम्बना ? कैसी पगली हो बेटियो ! यह क्या विडम्बना है ? संसार के बाजार में यदि किसी ने स्त्रियो की कीमत बढाई है तो वह हम चित्रकारो ने (**बलवन्तराव और बाबूराव आते हैं । दोनो समवयस्क .उम्र तीस से कम आधुनिक पोशाक. .अधिक कीमती नही ...निरन्तर नंगे सिर घूमने वाले ।**) आइए ! आइए बलवन्तराव... आइए बाबूराव . अब ठीक रहा । दोनो पतियो का बडा सुन्दर मेल रहा ।

बाबूराव—मुझे आज बहुत बुरा लग रहा है । कितने उत्साह से बिचारे ने चित्र बनाए थे .. ।

बलवन्त—ऐसा उत्साह किस काम का ? ससार से न्यारा बर्ताव रखकर किस प्रकार काम चलेगा बाबूराव ! ऐसी जिद मुझे अच्छी नहीं लगती ।

बाबूराव—यह भी ठीक है । लेकिन फिर भी मुझे बुरा लगा... किसी ने हाथ भी न लगाया उन चित्रो को, यो ही फेक दिए देखते ही ! अब आप ही बताइए विश्वासराव यदि आप कमेटी में होते तो क्या करते ?

विश्वास—मैं कमेटी में हूँ नही न ? फिर व्यर्थ अन्दाज लगाने से फायदा ? पूछना है तो अपनी पत्नी से पूछो ।

बाबूराव—वह क्या जाने यह सब ?

विश्वास—लेकिन चित्रकार हैं न वह ?

बाबूराव—है यानी है बस, .पर कुछ भी हो वह नारी है। बिना सोचे उत्तर नही देगी, क्यो जी, ठीक है न ?

रमणी—जवाब दो न रजनी ?

रजनी—कुछ भी हुई तो भी मैं औरत जात हूँ विचार करने के लिए समय चाहिए न मुझे ?

विश्वास—कितना समय चाहिए ?

रजनी—पाँच साल।

बाबूराव—सुनिए विश्वासराव।

विश्वास—पाँच साल ?

रजनी—मै समझती हूँ पाँच साल भी पर्याप्त न होगे। बडे महत्त्व का प्रश्न है यह। कम से कम बीस-पच्चीस साल तो सहज ही लग जाएँगे।

बलवंत—रजनी जी का स्वभाव बडा विनोदी है। भाग्यवान है आप बाबूराव।

बाबूराव—और आप ?

बलवन्त—हमारा क्या. .चल रही है पुराने जमाने की घर-गिरस्ती।

रमणी—लेकिन दादा क्यो नही आया अब तक ?

बलवन्त—सदमा पहुँचा होगा बिचारे को स्वाभाविक भी है। किसे बुरा न लगेगा। आदमी सर्वस्व व्यापार मे लगा दे और एकदम दिवाला पिट जाय, वैसा हुआ है यह।

विश्वास—लेकिन व्यापार करे तब न ? पानी मे पैसे बहाकर रोने से फायदा ?

रजनी—यह पुरुषो की दृष्टि है।

बाबूराव—और औरतो की ?

रजनी—औरतो की आँखे गिरवी रक्खी होती हैं नही तो देखती वे, और यदि देखती तो दिखाई भी देता, पर आँखे ही अपने वश नही हैं यह

कैसे देखा जाय। (**कल्याणी आती है। सुन्दर, चपल और ठसकवाली... युवती . आयु लगभग तेईस-चौबीस . भडकीले और कीमती कपड़े पहनने वाली बार-बार पोशाक और केशरचना बदलने की शौकीन**) .. आ गई ? रहा नही गया शायद ?

कल्याणी—क्यो ?

बलवन्त—शायद तुम्हे पता नही लगा ? ..बहुत बुरा हुआ।

कल्याणी—क्या बुरा हुआ ?

विश्वास—कहते है सुन्दरराव के चित्र नही लिए गए।

कल्याणी—यही न ? इसमें क्या बुरा हुआ ? यह तो होना ही था ऐसा न होता तब आश्चर्य था।

विश्वास—अब सुन लीजिए। और इसे कहते हैं आत्मीयता।

कल्याणी—जी हॉ, मैं आत्मीयता से ही कह रही हूँ। क्या बिगडा उसमे ?

बाबूराव—क्या बिगडा ? इज्जत जो चली गई। क्या उसे अब कही मुँह दिखाने को भी जगह रही है ? मै होता तो डूब मरता ?

रजनी—यही अन्तर है !

कल्याणी—हॉ...यही अन्तर है। मुझे बडा आनन्द हुआ।

बलवन्त—कितनी दुष्टता है यह। आनन्द हुआ ? सुन्दरराव की दुर्दशा हुई.. बेइज्जती हुई इसलिए तुम्हे आनन्द हुआ ?

कल्याणी—आनन्द हुआ, पर वह दुर्दशा हुई इसलिए नही...उनकी विजय हुई इसलिए।

विश्वास—चित्र अस्वीकार लिए गए इसमे सुन्दरराव की विजय हुई ?

कल्याणी—हाँ।

विश्वास—किस प्रकार विजय हुई ?

कल्याणी—मूर्ख की सिफारिश यानी पराजय .उनके द्वारा दुत्कारा जाना ही सच्ची विजय है।

बाबूराव—इसका तात्पर्य यह हुआ कि ये सब परीक्षक मूर्ख है . बुद्धिमान है केवल तुम्हारा सुन्दरराव ?

कल्याणी—ठीक यही।

विश्वास—सुन लीजिए . सुन लीजिए .कैसे मोती बिखर रहे है, सुन लीजिए। समस्त ससार ही बदलता जा रहा है।

बलवन्त—जो जैसा समझता है वैसा बोलता है। अपने को न जँचे तो ध्यान न देना चाहिए और अपना मार्ग स्वय चुनना चाहिए।

रमणी—आप कुछ भी कहिए लेकिन दादा की बराबरी कोई दूसरा नही कर सकता।

विश्वास—बलवन्तराव भी नही ?

रमणी—यह मैंने कब कहा !

विश्वास—तुम्हारी तुलना सारे ससार से न थी, प्रश्न था चित्रकारो का और यह बलवन्तराव भी सुन्दरराव की भाँति ही एक चित्रकार है.. ।

बलवन्त—सुन्दरराव की भाँति चित्रकार नही जी ..मै अपने तरीके का एक चित्रकार हूँ। मेरी किसी से तुलना नही होनी चाहिए।

रजनी—मै कहती हूँ...सुन्दरराव की बराबरी कोई नही कर सकता ।

बाबूराव—और तुम ?

रजनी—सुन्दरराव की बराबरी कोई नही कर सकता।

बाबूराव—मै नही मानता। पिछले साल तुम्हे स्वर्ण-पदक मिला.

रजनी—ऐसे पदक कला की कसौटी नही। मैं बहुत चाहती हूँ... सुन्दरराव का अनुकरण करना चाहती हूँ.. पर... ।

कल्याणी—पर क्या ? दिल से चाहती हो न ? फिर क्यो अपने दिल की आज्ञा का पालन नही करती ?

रजनी—मैं मजबूर हूँ। मै अपनी स्वामिनी नही।

कल्याणी—कहाँ खो दिया अपना स्वामित्व ?

रजनी—विवाह की वेदी पर !

कल्याणी—कह क्या रही हो पगली सी ?

विश्वास—और वह भी प्रत्यक्ष बाबूराव यहाँ सामने होते हुए, धन्य है यह स्त्री जाति !

बाबूराव—अब आप ही देख लीजिये विश्वासराव। आप बुजुर्ग हैं इसलिये पूछता हूँ . क्या ऐसा कहना इसे शोभा देता है ? और वह भी यहाँ चार आदमियो के बीच। फिर भी गनीमत है कि सुन्दरराव यहाँ नही है। होता तो मै पानी-पानी हो जाता। (**सुन्दरराव आता है, आयु में तीस से कम, एक युवक आर्टिस्ट बाबूराव बलवन्तराव की भाँति ही पोशाक .दिखने मे तेजस्वी . बातचीत में तेज, निरन्तर दूसरे को मात देने की प्रवृत्ति लिए हुए . आँखे पानीदार, देखते ही देखने वाले पर प्रभाव डालने वाली .स्वभाव शान्त पर अवसर पर फुर्तीला... सर्वसाधारण तौर से मौजी स्वभाव वाला** ।) .और यह है हमारा आधुनिक पत्नी धर्म ।

सुन्दर—(**हँसते हुए**) क्या हुआ पत्नी धर्म को ?

विश्वास—अरे हँस रहे हो ?

सुन्दर तो क्या रोऊँ ? किसलिए ?

बाबूराव—तुम्हे नही मालूम। तुम्हारे चित्र प्रदर्शनी मे नही लगाए गये .. फेक दिये गए ।

सुन्दर—जानता हूँ . ।

विश्वास—फिर भी हँस रहे हो ?

सुन्दर—उसी का मुझे आनन्द है। यदि चुन लिए जाते तो मुझे बहुत दु ख होता ।

बलवन्त—फिर भेजा ही क्यो था उन्हे ?

सुन्दर—फेक देते है या नही यह देखने के लिए। सोचा, इतने दिनो बाद भी कुछ अकल आई या नही इस बात का अन्दाज ले रहा था, पर अब समाधान हुआ । नही ..प्रगति नही हुई...अब भी जहाँ थे वही हैं।

बाबूराव—बुजुर्ग लोग है वे, इस बात का स्मरण है ?

सुन्दर—मै सबसे बुजुर्ग हूँ। पैदा होने मे जरा देर हो गई यही मेरी गलती हुई।

विश्वास—यह अकड ठीक नही सुन्दर। अभी तुम्हारी जिन्दगी आगे है। जीना है और घर-गिरस्ती बसानी है.

सुन्दर—लेकिन पहले कला की सेवा करनी है।

बलवन्त—और हम क्या कर रहे है ?

सुन्दर—कला का सौदा .केवल कला का विक्रय। आप लोग कला की विडम्बना कर रहे हैं।

रजनी—शाबास सुन्दरराव, किसी न किसी ने यह बात सुनानी ही चाहिए थी इन लोगो को।

विश्वास—चलिये...निकलिये। इससे बात करने में कोई अर्थ नही। व्यर्थ आये यहाँ टाँगे तोडते हुए। बहुत आगे बढ गया है यह। (उठता है)।

बाबूराव—चलिये, चार आदमियो मे नाहक फजीहत क्यो करवाए ...चल रहे हैं बलवन्तराव ?

बलवन्त—इन बुजुर्ग महाशय की बहनजी को भी तो चलना चाहिये।

रमणी—मैने आने के लिये ना कब की ? जो होना था पता लग गया...मेरा समाधान हो गया।

बाबूराव (रजनी से) और आप ?

रजनी—मै थोडी देर बाद आऊँगी।

बाबूराव—मन्त्रणा करनी है शायद ?

विश्वास—चलिए जी। वह आ जायगी। ऐसी कौन सी मन्त्रणा करेगी। हुआ तो फिर आयेगे हम लोग...चलिए।

(विश्वास, बलवन्तराव, बाबूराव और रमणी जाते हैं)

सुन्दर—(कल्याणी से) तुम कुछ नही बोली ?

रजनी—जो कहना था वह उसने पहले ही कह दिया।

कल्याणी—मुझे क्या अधिकार है ? मैं ऐसी कौन हूँ ? किसके लिए बोलूँ मैं ? और मेरे बोलने से फायदा भी क्या होगा ?

सुन्दर—तुमने देखे थे वे चित्र ! (**रजनी से**) और तुमने ? कैसे लगे तुम्हे ?

रजनी—हमारे मत को कौन पूछता है ?

सुन्दर—लेकिन तुम्हे लगे कैसे ?

रजनी—सच बताऊँ ? मेरी समझ मे नही आए। लगा कुछ अनोखी सी कल्पना है। अमीरी और गरीबी का अन्तर दिखाया है। देखते ही मन पर परिणाम हुआ...क्षोभ पैदा हुआ...पर उनका रहस्य समझ मे नही आया।

सुन्दर—तुम्हे किसी ने सिखाया ही नही। स्वभाविकता से जाना... पर शब्दो में कहते न बना। यही न ? ठीक। (**कल्याणी से**) और तुम्हे क्या लगा।

कल्याणी—सच ! मुझे क्या लगा ?

सुन्दर—यह मेरे प्रश्न का उत्तर नही।

कल्याणी—उत्तर देने का समय अभी नही आया है।

सुन्दर—(**बेचैनी से हाथ मलता हुआ**) अभी समय नही आया ! कब आयगा यह समय ! क्या ऐसा ही चलता रहेगा सृष्टि के अन्त तक ! जो कुछ भी नही जानते वे बराबर बकवास करते रहते है...और जो जानते हैं उन्हे मुँह खोलने की भी हिम्मत नही होती। फिर भला ससार को सत्य कैसे पता लगे। (**उठकर**) कृष्णा ! अरे ओ कृष्णा !

रजनी—वह है कहाँ घर में।

सुन्दर—कोई भी मेरी नही सुनता। नौकर-चाकर भी मुझे कुछ नही समझते।

कल्याणी—किस लिए चाहिए है कृष्णा ? गया होगा कही बाहर।

रजनी—इस तरह घर खुला छोड कर ?

कल्याणी—पर उसकी जरूरत क्या है ?

सुन्दर—मेरे जूते पोछने के लिए। यहाँ झाड़ू लगाने के लिए !

कल्याणी—मैं पोछती हूँ जूते...झाड़ू लगा देती हूँ ।

सुन्दर—तुम ? लखपति की बेटी तुम ?...अपने घर में भी कभी झाड़ू लगाई थी ? ..वह रेडियो, किसने बद कर दिया ?. अव्यवस्था फैली है चारो ओर !

रजनी—घर में घरवाली न होने से ऐसा ही होगा ।

सुन्दर—और होने से समझती हो सुख लगता है ?

रजनी—सच है वह भी नही कहा जा सकता। आज आपकी वे शिष्याएँ नही आई ?

कल्याणी—उन्हे भी पता चल गया होगा विश्वास उठ गया होगा उनका ।

सुन्दर—सम्भव है। अब मुझे कुछ भी असम्भव नही लगता। (**कृष्णा आता है बम्बई के घरों में दिखाई देने वाले, रामा (नौकरो के लिए प्रयुक्त सर्व रामान्य सम्बोधन) की भाँति दिखाई देने वाला। बुद्धिमान, चालाक पर काफी अनउत्तरदायी...संगीत में रुचि रखने वाला.. गुन-गुनाने की आदत**) कहाँ थे ?

कृष्णा—यही नही था ?

सुन्दर—फिर जवाब क्यो नही दिया ?

कृष्णा—दूर था वहाँ. .पान खाने गया था।

सुन्दर—स्टूडियो साफ नही किया ?

कृष्णा—नही किया ?

सुन्दर—कब किया !

कृष्णा—कल ।

सुन्दर—और आज !

कृष्णा—यो कूडा है ही कहाँ। कही जरा सा रग गिरा है, कही कुछ कागज है और कही इधर-उधर जरा सी धूल पडी है। लगाऊँगा

झाड़ू कल तब तक काम चल ही रहा है। मिट्टी से कचरा ही होगा इसलिए सोचा आज ही क्यों झाड़ू लगाऊँ ?

सुन्दर—यह हो रहा है। यही ससार मे चल रहा है। फिर से कूडा इकट्ठा होगा इसलिए पडा हुआ कूडा कोई नही झाड निकालता। (**कृष्णा से**) जाओ चाय बनाओ।

(कृष्ण 'जी' कह कर जाता है, तभी कुंदा और मदा आती हैं, बारह चौदह साल की, पोशाक आजकल के किसी भी स्कूल की लड़कियो सा।)

रजनी—ये आ गईं शिष्याये। क्यो री कुन्दा, मदा देर क्यो लगाई आने मे।

कुंदा—मै समय पर कब आई हूँ ? और आ ही जाऊँ तो मास्टर साहब कहाँ होते है यहाँ ?

मंदा—नही जी. में ठीक समय पर आती हूँ, पर आज मुझे गाने के लिये जाना था।

कल्याणी—अच्छा ? तूलिका के साथ तबूरा भी हाथ में लिया है ?

सुन्दर—तुम्हे गाना आता है मदा ?—मुझे अभी तक पता नही था।

कुंदा—यह सच हैं मास्टर साहब ?

सुन्दर—क्या ?

कुदा—सुना है इस वर्ष भी आपके चित्र नापसद कर दिये गए ?

सुन्दर—हाँ।

कुंदा—फिर अब ? पिताजी ने कहा ऐसे मास्टर की कक्षा में न जा..।

सुन्दर—शाबाश है तुम्हारे पिता जी की। कल से तुम्हारा आना बन्द है न ? फिर आज ही चली जाओ।

कुंदा—इस तरह गुस्सा क्यो हो रहे हैं मास्टर साहब। आगे भी तो सुनिए...

मंदा—बहुत गुस्सा हुए थे इसके पिता जी, पर मैंने उन्हे समझाया।

रजनी—इसके पिता जो को तूने समझाया ! शाबास ! कैसे समझाया ?

सुन्दर—बस करो । . मुझे कुछ भी नही सुनना है । जाओ, दोनो निकल जाओ . और औरो को भी बतला दो, ढिंढोरा पीटो सारे शहर मे...जाओ ।

मदा—ऐसा भी क्या मास्टर साहब । पहले सुनतो लीजिए ।

सुन्दर—अच्छा कहो . सुनता हूँ चाहे जो कहो सब सुनता हूँ । संसार की बाते सुनने के लिये ही तो मै पैदा हुआ हूँ ? हाँ, कहो . कहो, रुक क्यो गई . .कहना शुरू करो ।

कल्याणी—इन जरा सी लडकियो को क्यो ऐसी सुना रहे है ? उन्हे क्या समझ है ? जो लोगो से सुनती हैं वही तो कहती हैं ? मन को शान्त रखने की आवश्यकता है तो इसी समय ।

सुन्दर—थेक यू ..हाँ.. क्या कह रही थीं तुम ?

मदा—क्या भला कह रही थी मैं ? एकदम भूल गई ।

कल्याणी—अब रहने दो । तुम्हे गाना आता है न ? फिर एक मीठा सा गाना तो सुनाओ ।

रजनी—खूब ! अच्छा उपाय निकाला, त्रस्त प्राणो के लिये गाने जैसी दूसरी औपधि नही ।

कल्याणी—पर सुनो मदा, कोई रुलाने वाला गाना न गाना । आजकल बडी बाढ आई है रुलाने वाले विरह गीतो की वैसा गाना नही, समझी ! कोई उत्साहदायक, वीर श्री उत्पन्न करने वाला गाना गाओ ।

सुन्दर—क्या गाने से शान्त होगा मेरा मन ? कलेजा फटा जा रहा है भीतर से ! फिर भी बाहर से मै हँस रहा हूँ पाखड कर रहा हूँ .. केशवसुत ने है सो झूठ नही 'ये दिन चिन्ता के, परन्तु मिथ्या हँसने के...।

कल्याणी—५ ।५न जाने दो, मुझे तव गाना गाने दो...हाँ गाओ मदा ।

मंदा—क्या गाऊँ कुन्दा ?

कुन्दा—मै क्या बताऊँ ? मै कहाँ तुम्हारे गाने जानती हूँ। (**मन्दा सुर मिलाती है...फिर धीरे-धीरे गुनगुनाती है...तभी कवि ऑथर और नट प्रवेश करते हैं)**।

कवि—ठहरो !

ऑथर—सुन्दरराव, यह क्या गडबड है ?

कल्याणी—कैसी गडबड ?

ऑथर—कहती हो कैसी गडबड सारी बम्बई जान गई हैं... ।

कवि—कि इसके पश्चात् सुन्दरराव का प्रदर्शनियो से बहिष्कार किया जायगा। और पूछ रही हो कैसी गड़बड ?

रजनी—अजी जरा बोलने भी तो दीजिए। ये नटवर्य देखिए...कुछ कह रहे हैं।

नट—शब्द...समझे ?...शब्द का मोल है। अक्षर कौडी कीमत का है । कहते हैं साहित्य। ..बोलने वाला न होता तो लिखने वाले को कौन पूछता ? पहले क्या ? .बोलिये ! पहले शब्द की पहले अक्षर ?

ऑथर—बस करो अपना शब्द। पहले मुझे यह बताइये कि क्या यह खबर सही है ?

सुन्दर—और यदि सही हो तो ?

ऑथर—तो मै उस विषय पर एक उपन्यास लिखने वाला हूँ।

नट—नाटक क्यो नही लिखते !

ऑथर—उस नाटक को खेलेगा कौन ? इन आर्टिस्ट लोगो से जनता परिचित है कहाँ ! नाटक का विषय परिचय का...लोगो के परिचय का हो तभी तो समझेंगे दर्शक ! आर्टिस्ट का विषय नाटक के योग्य नही।

कवि—यह विषय काव्य के योग्य है।

ऑथर—सच है...काव्य कोई पढता नही।

कल्याणी—कैसे स्वार्थी हैं यह लोग । . सभी अपने-अपने फायदे की सोच रहे हैं। क्या पूछा था यह भी याद नही किसी को।

सुन्दर—यही बात है। दूसरे का दु ख अपने मन बहलाव का साधन होता है। इसलिए ससार में दुख को महत्व दिया जा रहा है। नही तो कोई किसी को न पूछता। ठीक है बन्दो कह लो, चाहते क्या हो ? मेरी फजीहत हुई यही न ? ठीक है वह ! ...

कवि—बडा आश्चर्य है। रजनी, तुम्हारा क्या ख्याल है ?

रजनी—मै भी यही सोचती हूँ।

कवि—कि सुन्दर की फजीहत हुई। सुन लीजिए ऑथर, यह है आपकी स्त्री देवी समझे !

ऑथर—और तुम्हारी ?

नट—दोनो एक जैसे है दोनो ही एक जैसे हैं। जरा भी कसक नही, हृदय मे टीस नही. जी नही.. जलता धधक नही उठता, क्या समझते हो तुम लोग ! ऐ ? क्या समझते हो ? उन लडकियो को देखो.. वे सुन्दरराव की शिष्याये क्या मोचेगी ? ऐ बोलो, क्या सोचेगी वे ?

कुंदा—कुछ नही सोचती हम। कुछ भी नही सोचती।

ऑथर—लो .हुई फजीहत। . भाई, यह तुम्हारा काम नही है। निरीक्षण चाहिए ..अवलोकन चाहिये . सूक्ष्म दृष्टि, भावुकता चाहिये। ज्ञानेश्वर के भैसे की भाँति चिल्लाने भर से ससार का मर्म नही पता लग सकता।

कल्याणी—प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना राग अलाप रहा है।

सुन्दर—ऐसा न कहो कला। अपनी ओर देखे बिना दूसरा नही जाना जा सकता। पहले अपने आपको परखना चाहिए। कौन सी भूल की उन्होने, हर व्यक्ति अपने हिसाब से देखता है। ससार की दृष्टि में मेरी छी थू हुई। यह प्रसग उन पर आता तो उन्हे दु ख होता। वही तो उन्होने महसूस किया. और इसीलिए वे मेरा समाचार लेने आए। पर मैने वैसा अनुभव नही किया...।

कवि—क्या कह रहे हो ? क्या तुम नही समझते कि तुम्हारी छी थू हुई ?

सुन्दर—नही। मुझे लगा कि मेरी विजय हुई।

आँथर—सुन लो लाला ..इसे कहते है मर्द। नही तो तुम, बासे सूँघे हुए गजरे के फूल चुनने वाले तुम ।

सुन्दर—ऐसा न कहो, उसके हिसाब से उसका कहना ठीक है। तुम मुझे मर्द कहते हो ..कहते हो न ?. .फिर क्यो आए मुझ से पूछने ! पर है भी ठीक ही . तुम्हे सहानुभूति महसूस हुई। सारी बम्बई मे चर्चा फैली, समाचार-पत्र चिल्लाने लगे इसीलिए तुम मुझ से पूछने आए ? क्यो ? देखा कल्याणी यह इस प्रकार है...व्यक्ति जब दूसरे पर दोषा-रोपण करता है तब यह नही देखता कि वह स्वय क्या करता है।

आँथर—वाह, यानी हमारी सहानुभूति शायद बेकार ही चली गई ?

सुन्दर—तुम समझते हो न कि मैं मर्द हूँ ? फिर सहानुभूति कैसी ? प्रसग पर ही तो सहानुभूति दिखाई जाती है ? पर जब मै इसे 'प्रसग' नही समझता और तुम मुझे मर्द कहते हो इसलिए तुम भी नही समझते फिर पूछने क्यो आए ?

रजनी—हाँ...अब दीजिए न उत्तर !

कवि—कुदा मदा . तुम मेरा वह गीत तो सुनाओ। क्या रक्खा है इस व्यर्थ की चर्चा मे ? काव्यानन्द की भाँति दूसरा आनन्द नही। इस आनन्द मे सब दु ख भूल जाता है।

नट—फिर दु ख कहा ! ऐ ! फिर से दु ख कहा ? अल्पबुद्धि युवक, फिर से दु ख कहा ? हजार बार वह कह रहा है कि मुझे दु ख नही हुआ, यह प्रसग नही यह विजय है, फिर भी कहते हो कि दुख हुआ ! धिक्कार, धिक्कार . धिक्कार है तम्हे !

कल्याणी—सारा बनावट का बाजार है।

आँथर—कौन बनावटी ? हम लोग ? सुन लो कवि.. सुन लो नट-वर्य .. हम लोग बनावटी हैं .और तूलिका की झाडू से मोटे कागज, कैनवास का आँगन बुहारने वाले ये है जन्मजात प्रतिभा के पुतले ! चलिए यहाँ क्षण भर भी नही ठहरना चाहिए.. जहाँ आदमी में इन्सानियत

नही वहाँ कोई क्या बात करे ? चलिए ।

कवि—सच है... सच है । रगो के पात्र मे डुबकियाँ लगाने वाले ये मेढक शब्द की कीमत क्या जाने ? चलिये ।

नट—शब्द ..केवल शब्द . 'हम शब्द सृष्टि के ईश्वर' ।

ऑथर—तुम लोग नही ..हम । हम लेखक लोग ..ज्ञानेश्वर के वशज .. ।

कवि—तुम भी नही. . शब्द सृष्टि के ईश्वर हम हैं । ज्ञानेश्वर क्या कहते हैं ? 'अब वदू कवीश्वर, जो शब्द सृष्टि का ईश्वर'... ।

ऑथर—बस हुआ । चलिए ..(**तीनों जाते हैं ।**)

सुन्दर—देखा कला ? . देखा रजनी ?. .यह चल रहा है ससार में ..और यह नई पीढी चुपचाप देख रही है । यह क्या सोचेगी ? हम सब इस प्रकार आपस मे झगड रहे हैं बच्चे देख रहे हैं और हम सम्मान की अपेक्षा करते हैं । कही भी सच्चा अन्त करण नही, .कोई भी ईमान-दार नही ..जी चाहता है .जाने दो, छोडो उस विषय को । हाँ कुन्दा ..मन्दा होने दो तुम्हारा गाना आरम्भ ।

कल्याणी—सुना कैसे जाता है गाना ? मुझे स्वय आश्चर्य होता है . .जी जैसे तिलमला उठा है...क्रोध आता है दुनिया पर, पर सोचती हूँ . ।

रजनी—क्या सोचती हो ?

कल्याणी—कुछ नही !.. गाओ तो मन्दा !. अच्छा सा समझी ! मधुर सा, एक दम ताजे फूल की भांति कोई मीठा गाना गाओ ।

कुन्दा—अब नही गाया जाता मुझ से । न जाने कौन-कौन आता है... क्या-क्या बाते करता है, जी ऊब उठता है ।

मन्दा—पहले पिता जी घर पर नाराज हुये थे...किसी तरह मैंने उन्हे समझाया... ।

कुन्दा—मुझे आने भी नही दे रहे थे...ऐसा क्या हुआ है मास्टर साहब ?

सुन्दर—(हँसते हुए) . मुझे स्वय अब तक नही मालूम ।

कुंदा—चित्र ना पसन्द करने से क्या होता है ? और ये नापसन्द करने वाले कौन होते है ? कम से कम मुझे तो आपके चित्र बहुत पसन्द हैं !

रजनी—(मदा से) और तुम्हे !

मन्दा—मुझे ? ह !...सुनने के लिए तुम होनी चाहिए थी । कैसे तडाक से बोल रही थी इसके पिता जी के सामने...।

कल्याणी—जरा मुँह तो देखो बोलने वाली का ! मुँह पर की मक्खी तो उड़ाई नही जाती और कहती है, तडाक से बोली .. ।

कुन्दा—ऐसा न कहिए, सचमुच यह बोली थी ..एकदम चुप कर दिया था इसने पिता जी को । इसीलिए तो मै आई .फिर भी शका है ही, न जाने किसने क्या कह दिया है उनसे...वे एक दम गुस्सा हैं ।

सुन्दर—देख लिया ? यह हाल है । मैं नही जानता था कि इतनी जल्दी यह बादल घर-घर पर छा जायगा !

रजनी—परिश्रमी लोग जो हैं ? एक-एक व्यक्ति प्रचार करता हुआ घर-घर घूम रहा था ।

कल्याणी—सब परम्परा के गुलाम हैं । जरा भी कोई गन्दा मार्ग छोड कर नया मार्ग निर्माण करने लगे तो जान निकलने लगती है मरो की ।

कुंदा—एक बार पिता जी को समझाइएगा मास्टर साहब ?

सुन्दर—माफ करो लडकियो, यही नही हो सकता । मै किसी के भी सामने याचना नही करूँगा...फिर भूखा ही क्यो न मरना पडे, वह स्वीकार है ।

मन्दा—यह ठीक है । पर फिर हमारा क्या होगा ? फिर हमे कौन सिखायेगा ?

सुन्दर—वाह ! और बहुत से है । इसके अतिरिक्त आर्ट स्कूल है !

मन्दा—मुझे ड्राइग मास्टर नही होना है...।

कल्याणी—फिर क्या होना हैं ?

मन्दा—मुझे मास्टर साहब की भाँति ही बडी चित्रकार बनना है !

रजनी—यानी जिसके चित्र फेक दिए जाते हैं ऐसी ही चित्रकार न ?

कुंदा—फेक देने दो ! हम स्वय ही अपने चित्र देखती बैठेगी ।

सुन्दर—(**अर्धस्वगत**) यह वृत्ति आगे चल कर बनी रहेगी । यह बाल्यावस्था, यह स्वाभाविक जीवन...स्वाभाविक विचार. .स्वाभाविक दृष्टि, साफ गायब हो जाती है व्यवहार के प्रहार होते ही !

कुन्दा—यह व्यवहार क्या होता है मास्टर साहब ?

सुन्दर—अभी न करो उस बात का विचार । बाद मे अपने आप जान जाओगी ।

कुंदा—यह ठीक नही मास्टर साहब ।...बताइए न ?

सुन्दर—यह जो मै तुम्हे नही बता रहा हूँ, इसी को व्यवहार कहते हैं।

रजनी— इस तरह क्यो बता रहे हैं उन्हें ?...मै बतलाती हूँ सुनो...

सुन्दर—ना रजनी, निर्मल मन में विष का बीज क्यो बोती हो ? कहते हैं अज्ञान में आनन्द होता है वह बात झूठ नही । कुन्दा, मदा आओ हम लोग एक बार उस आनन्द का आस्वादन कर ले । तुम लडकियो ने यदि जिद्द भी की तो भी तुम्हारे माता-पिता तुम्हारी नही सुनेगे। इसलिए आज का यह आखिरी दिन है। इसके बाद उजाड हो जायगा यह स्थान।..पिशाच की भाँति तूलिका चलाते हुए यहाँ मुझे अकेले ही बैठना पडेगा। इसलिए जाने से पहले कुछ मीठी सी यादगार छोड जाओ यहाँ। एक अच्छा सा गीत तो सुनाओ...एक दम मीठा-मीठा...इतना मीठा कि रोना आ जाय। (**दोनो केवल देखती रहती है**) नही सुनती ! सच है.. अब मेरी कौन सुनता है । ससार ने नासमझ ठहराया हुआ मै आदमी .. !

कुन्दा—नही मास्टर साहब.. क्षमा कीजिए...ऐसी बाते न कीजिए...।

मन्दा—क्या गाऊँ कल्याणी ?

कल्याणी—प्यार करके रे किया क्या पाप, गाओ ।

सुन्दर—सच है यह । यही प्रश्न मेरे सामने खडा है ।

रजनी—किस से प्रेम किया ?

सुन्दर—अपनी कला से ।

रजनी—कला से ? इस कला से ? कल्याणी से ?

सुन्दर—कला से...अपनी चित्रकला से. ।

(वे दोनो एक दम गाने लगती हैं .वह चुप हो जाता है)

गीत

प्यार करके रे किया क्या पाप
व्यक्त करना भावना भी मना ?
सही मैंने सजा सब प्यार की
पर असह हाय सुख की वेदना...

बाबूराव—(प्रवेश करके) हो गई तुम्हारी मत्रणाएँ ?

(कोई भी उसकी बात नहीं सुनता . गाना जारी हैं)

अब क्या कहा जाय इन लोगों को ? महफिले हो रही हैं गाने की ! .. अरे क्या हम लोग नहीं गाते । मै चित्रकार हुआ तो भी गायक हूँ यह जान लो...अरे कान फूट गए है तुम लोगो के ? (अकस्मात) अपने आप वह उनके साथ गाने लगता है ।

सुन्दर—कौन बाबूराव ! वाह ! अच्छा साथ हुआ । नई और पुरानी पीढी इस प्रकार एक सुर मे गाने लगे तो यह पृथ्वी स्वर्ग बन जाए ।

बाबूराव—(क्रोध से दाँत पीसते हुए) किया क्या पाप ? विवाह किया न हमने । वहीं भूल हुई...कही फिसल पडे । और चित्रकला घर मे ले आए ।

कुन्दा—पर पहले गायन कला तो थी ही न घर मे ?

बाबूराव—गायन कला को कौन पूछता है ? उसका कोई प्रदर्शन नही करता । इसके अतिरिक्त मैं भी ऐसा कौन कोई बडा गायक हूँ ? जरा गुनगुना लेता हूँ नहाते समय ! किया क्या पाप ।

कुन्दा—(मुँह बनाते हुए) फिर गा रहे क्यो आप ?

बाबूराव—अब चलो घर। चूल्हा तो जलना चाहिए घर में चित्र चाटने से पेट नही भरता।

कुन्दा—और इनके चित्र जो बिके हैं। बारह सौ रुपये मिले हैं न ?

मंदा—और छः सौ रुपये का पुरस्कार मिला है सो अलग ! और स्वर्णपदक !..

कुन्दा—और आप कौनसी नौकरी करते है जी बाबूराव ?

बाबूराव—तुम्हे थप्पड लगाने की। ज़बान बहुत चलने लगी है। बहुत सिर पर चढा रक्खा है छोकरियो को। बडा बूढा कोई है नही लगी बक-बक करने, चलो घर अब।

मंदा—और आपको .. ।

रजनी—चुप रहो जी . चलिए।...आ रही हो कला ?

कल्याणी—नही तुम जाओ।

बाबूराव—और तुम इसके साथ यहाँ अकेली रहोगी ? कुछ लाज-शरम है या नही ?

सुन्दर—जाओ कला मुझसे बिछुड गई हैं अब। मुझे कोई नही चाहिए। सब चले जाओ। उकता गया है जी इस मनुष्य जाति से .. इन्सानियत ढूँढने के लिए अब मुझे कुत्ते बिल्लयो को अपनाना पडेगा।

बाबूराव—क्यो हिम्मत हार रहे हो सुन्दर ? यह अपना पागलपन छोडो और अन्य चार चित्रकारो की भाँति कुछ बनाओ ! कौन कहाँ का वह रशियन या जर्मन हिमालय में जा कर बैठा है, उसका अनुकरण तुम क्यो करते हो ?

सुन्दर—मै किसी का अनुकरण नही करता ! मै अपनी जगह स्वतत्र हूँ।

बाबूराव—पर हम वैसा समझते हैं, ससार समझता है, कि तुम उस रोअरिक का अनुकरण करते हो।

सुन्दर—जाइए यहाँ से . निकलिए। सब लोग चले जाइए । मुझे अपने इस निर्मल स्थान में विष की फुफकार नही चाहिए। निकलो

रजनी ..जाओ अपने धनी के पीछे । निकलो । और तुम भी जाओ जी ..कल से यहाँ न आना । (कला के अतिरिक्त सबको ढकेलता हुआ बाहर निकालता है) तुम क्यो रह गई ? तुम भी जाओ। निकलो यहाँ से । मुझे किसी का साथ नहीं चाहिए । अकेला ! .निकलो...

कल्याणी—पर मे कहती हूँ ।

सुन्दर—कुछ न कहो । क्षमा करो । यहाँ से चली जाओ ।

कल्याणी—कैसे जाऊँ ? जो कहना है वह कहे बिना कैसे जाऊँ ?

सुन्दर—मुझे कुछ भी नही सुनना है ।

कल्याणी—फिर मै अपने आप से बात करूँगी । नही सुनना तो न सुनिए । पगली कले—(बडबडाती हुई कल्याणी धीरे-धीरे जाती है । सुन्दर राव देखता रहता है द्वार तक जाकर झाँककर देखकर वापिस आता है और कुर्सी पर बैठता है)

सुन्दर—अकेला—मै अकेला—इस समस्त भारतवर्ष मे मै अकेला !

(पर्दा गिरता है)

दूसरा अंक

[स्थान—प्रथम अंक की भाँति। एक अधूरा नग्न चित्र स्टैंड पर रखा है। परदा उठते समय कृष्णा भूमि और सामान झाड़ने का फार्स करता हुआ अपने आपसे गुनगुना रहा है।]

कृष्णा—(गाते हुए स्वगत) जमुना बिच खेलूँ खेल अकेली क्या. .।

आँथर—(प्रवेश करके) अरे ओ...तेरा मालिक कहाँ है ?

कृष्णा—जमुना बिच खेलूँ ।

आँथर—क्या खेलूँ ?

कृष्णा—खेल अकेली क्या. ।

आँथर—चुप रहो। .

कृष्णा—कौन हो जी तुम ? इतना चिल्ला क्यो रहे हो ?

आँथर—मालिक कहाँ हैं तुम्हारे ?

कृष्णा—कैसे मालिक ?

आँथर—तुम्हारे मालिक !

कृष्णा—मेरा नही है कोई मालिक। मै ही यहाँ का मालिक हूँ।

आँथर —तो सुन्दरराव कौन है ?

कृष्णा—अच्छा वे ? वे मेहमान हैं। कभी कभी यहा आते हैं ..कभी रहते हैं। खाते भी हैं कभी-कभी ! मै ही तो उन्हे खिलाता हूँ।

आँथर—अच्छा ? तो तुम यहाँ के मालिक और वे यहाँ के मेहमान ? खूब !

कृष्णा—खूब क्या ? यह ठीक है। उन्ही से पूछ लीजिये . वे क्या जाने कि घर में क्या है और क्या नही.. कि यहाँ कौन आता है और कौन

जाता है कि रुपया पैसा, क्या है उनके पास ? मैं ही तो वह देता हूँ। फिर मालिक कौन हुआ ?

ऑथर—ठीक है। गृह तु गृहणीहीन कातार.!

कृष्णा—क्या कहा ?

ऑथर—कुछ नही मै कह रहा था कि घर मे घर की मालकिन न होने से नौकर घर का मालिक बन बैठता है...कहानी के लिए बडी अच्छी थीम है यह! कल इस विषय पर एक कहानी लिख ही डालता हूँ!.. अच्छा सुन्दरराव कहाँ हैं ?

कृष्णा—मुझे क्या मालूम !

ऑथर—अब क्या किया जाय इसे ?

कृष्णा—ढूँढा जाय !

ऑथर—कहाँ ?

कृष्णा—पृथ्वी पर। जाइए न ढूँढने ! .अब क्या बताऊँ तुम्हे, हमारा सेठ चाहे जहाँ थोडा ही मिल जाएगा ? जहाँ कोई सुन्दर सी स्त्री हो वहाँ देखो .वही कही होगे ..

ऑथर—सच है। हमारी यही तो भूल हुई। लेखक को पूछता कौन है ? चित्रकार यही होता है. .हाँ...पहले ही भूल हुई अब पछताने से क्या लाभ! वाह! **(एक नग्न चित्र की ओर देखते हुए)** वाह यह ऐसा भी देखने को मिलता है इन चित्रकारो को!...भाग्यवान हैं! चित्र की ओर देखता रहता है तभी बाबूराव आता है।

बाबूराव—**(निश्वास छोड़ते हुए)** वह चित्र है . माडेल नही! हाय रे यह लेखनी!

बाबूराव—सुन्दरराव कहाँ है ?

कृष्णा—जो आता है पूछता है, सुन्दरराव कहाँ हैं! अरे कोई एक बार इस कृष्णा को भी तो पूछो! ..चाय पिलाता हूँ मै और पूछ-ताछ करते है...!

ऑथर—सुन्दरराव की! ठीक तो है! पुस्तक लिखते है हम पर

कहा जाता है कि उसकी बिक्री हुई ऊपरी कवर-चित्र के कारण।...

बाबूराव—फिर चित्र छापते क्यो हैं ऊपर ?

ऑथर—प्रकाशक नही मानते ! और वे भी ठीक है, ऊपरी चित्र आकर्षक न हो तो अन्दर देखेगा कौन, पुस्तक खोल कर ? यो ही नही बिकते फडके के उपन्यास !

बाबूराव—(**कृष्णा से**) अरे ओ, मेरी वह आई थी, यहाँ ?

कृष्णा—आपकी कौन ! यहाँ कितनी ही औरतें आती हैं। उनमे से आपकी कौन और मेरी कौन, कौन पहचाने ? बोर्ड लगाना चाहिए पतियो का प्रत्येक के सिर पर !

बाबूराव—अब क्या कहूँ। जैसा मालिक ठीक वैसा ही नौकर, सीधा जवाब देना तो हराम है।

ऑथर—सुनिए बाबूराव, मुझे एक खबर मिली है।

बाबूराव—कैसी ? सुन्दरराव के बारे में ? अब और कौन सी गड-बड़ की उसने ?

ऑथर—गडबड नही .कहते हैं उसने अपने वे चित्र पेरिस भेज दिए हैं।

बाबूराव—कौन से चित्र ? फेंके हुए ? कैसा मूर्ख है। पेरिस के चित्रकार क्या अधे हैं या मूर्ख हैं ? किसने कहा तुमसे ?

ऑथर—किसी ने कहा हो पर यह बात है ठीक। जिसने कहा है उसी ने अपने हाथो पार्सल किया था।

बाबूराव—लेकिन किसने ? बताओ तो सही. मै किसी से न कहूँगा।

ऑथर—बलवन्तराव ने बताया। उससे उसकी पत्नी ने कहा। (**रमणी आती है**) अरे बाप रे ! वही आ गई।

रमणी—घबरा से गए ?

ऑथर—कौन घबराया ? मै ?. किससे घबराता ? और किस लिए ?

रमणी—दादा आज यहाँ न आएगा। कोई मिलने आए तो उसे कल मिलने के लिए कहा है उसने।

बाबूराव—तुम शायद यही सदेसा लाई हो ?

रमणी—जी। मुझे इसीलिए भेजा है उसने।

ऑथर—बलवन्तराव कहाँ हैं ?

रमणी—होगे कही।

ऑथर—देख लीजिए। भाई का संदेसा लाती है पर इसे पति का पता नही, यह है दुनिया।

बाबूराव—यह हाल है दुनिया का। आँखे खोल कर आर्टिस्ट के साथ विवाह किया यही भूल हुई। कही रहती है, कही भटकती है, किसी के साथ जाती है ।

ऑथर—और क्या करती है. .

रमणी—चुप रहिए।

बाबूराव—कुछ भी नही कहा जा सकता। अब इसे कहाँ ढूँढू बडी पागल हो रही है सुन्दरराव के पीछे। सब लोग उसे बुरा-भला कहते हैं और यह उसकी स्तुति के गीत गाती है। ज़रा भी उसे बुरा कहा हुआ सहन नही करती !. असल में मैंने ही भूल की।

रमणी—अच्छा आप उसे ढूँढ रहे हैं ? धत् तेरे की ! फिर यो क्यो नही पूछा मुझ से ?. .

बाबूराव—वह तुम्हे मिली थी ?

रमणी—चलिए मेरे साथ।

बाबूराव—कहाँ ?

ऑथर—अजी कहाँ क्या कह रहे हो ? जाओ न उसके साथ। साथी तो है।

रमणी—चुप रहो। चलिये, (**दोनों जाते है**)।

ऑथर—हमें केवल 'चुप रहो' ऑथर जो हैं हम ! ये गायक है । गायन कला है, नाचना कला है, चित्र बनाना कला है . कला नही है तो

लेखन ! काश, मै कवि ही होता ! . क्यो रे कृष्णा, सुन लिया न ?

कृष्णा—सुनाई नही देता क्या मुझे ?

ऑथर—तो कैसा लगा तुम्हे ?

कृष्णा—अच्छा लगा ।

ऑथर—क्या अच्छा लगा ? हमें कोई नही पूछता यह अच्छा लगता है ?

कृष्णा—यह बात नही, मेरा मतलब कोई औरत किसी को साथ ले जाने लगे तो ज़रा अच्छा लगता है ।

ऑथर—अरे, उसका तो बुरा लगना चाहिए !

कृष्णा—यह भी ठीक है !

ऑथर—तो अब ? यहाँ तो कोई भी नही है । यहा बैठ कर क्या करूँगा ? ये ऐसे चित्र देखते ही प्राण व्याकुल होने लगता है । रहा भी नही जाता और जाया भी नही जाता ! क्यो रे, यह ऐसे चित्र बनाते हैं तब तुम होते हो यहाँ ?

कृष्णा—ना बाबा, कुण्डी ताले लगा कर बनाते हैं ।

ऑथर—अच्छा ? बुरी बात है ।

कृष्णा—यह भी ठीक है ।

ऑथर—तो जो हरीभाऊ ने कहा वह झूठ नही...यह दुनिया है !

सुन्दर—(**रजनी के साथ प्रवेश करके**) क्या किया जी दुनिया ने ऑथर ?

ऑथर—दुनिया क्या करेगी ? जो करते हैं वह हम लोग करते हैं और फिर दुनिया हमारे मुँह पर थूँकती है ।

सुन्दर—उसकी परवाह कौन करता है ?

ऑथर—वही तो मै भी कह रहा हूँ । अच्छा, अब तक कहाँ थे ?

सुन्दर—क्या काम है ?

ऑथर—वैसे काम कुछ नही.. यो ही गप्पे

सुन्दर—गप्पे मारने के लिए मुझे अवकाश नही है ।

कृष्णा—जाओ चाय बनाओ। (कृष्णा जाता है)।

आँथर—क्या कहा ?

सुन्दर—मैंने कहा गप्पे मारने के लिए मैं खाली नही हूँ।

आँथर—वह तो दिखाई ही दे रहा है. शायद ऐसा ही चित्र बनाना है।

सुन्दर—जाओ तो यहाँ से।

आँथर—सुना है चित्र पेरिस भेजे हैं ?

सुन्दर—उससे तुम्हे क्या ? तुम चित्रकार तो हो नही। जाओ देखूँ।

आँथर—अच्छा भाई .रजनी, तुम्हारा पति आया था तुम्हे खोजता हुआ।

रजनी—अच्छा .।

आँथर—अच्छा क्या उसकी जान तुम्हारे लिये व्याकुल है और तुम यहाँ इस प्रकार भटक रही हो।

सुन्दर—कह रहा हूँ न कि तुम अब जाओ .।

आँथर—यह बात है ! अच्छा, मैं जाता हूँ पर बाबूराव मुझे मिलेगा, वह रमणी ले गई है उसे .साथ-साथ गए हैं। कैसे मजे की बात है.. (जाते-जाते लौट कर) पर चाय ला रहा है न कृष्णा ?

सुन्दर—वह चाय तुम्हारे लिए नही है, .अब जाओ तो।

आँथर—जाता हूँ . पर कहाँ, जानते हो ?.. बाबूराव को ले आता हूँ। (जाता है)।

सुन्दर—कैसा है यह मनुष्य-स्वभाव ! . उकता गया हूँ इस दुनिया से। जी चाहता है, सीधा जाऊँ और कही हिमालय में रहूँ।

रजनी—फिर मुझ जैसो का क्या होगा ?...आप जैसे लोग हिमालय मे जाकर रहने लगे तो हम जैसो को मार्ग कौन दिखायगा ?

सुन्दर—किसी को मार्ग दिखाने का मुझे अधिकार ही क्या है ? मै कौन होता हूँ ! क्यो कोई मेरी सुने ? मलिन मार्ग छोड कर मै झाड-

झकाड मे से नया मार्ग निकालने का प्रयत्न कर रहा हूँ, उसमें औरो को भी मै क्यो घसीटूँ ?

रजनी—पर जिन्हे वही भाता है .कटीला रास्ता ही पसन्द है, उनका क्या इलाज है? ..उन्हे आप आधे रास्ते मे छोड जाइएगा ? और क्यो? कमीने लोग ताने कसते हैं इसलिए ?

सुन्दर—पर वे बाते करते हैं? उनके घाव लगते हैं न ? जखम होती है हृदय मे...उसमें से रक्त बहता है . यह सहन नही होता। मै अकेला होता तो परवाह न करता, पर तुम जैसी स्त्रियो की इज्जत पर आक्रमण करते हैं।

रजनी—हम कब इसकी परवाह करती हैं, कला के लिए क्या त्याग नही करना चाहिए ?

सुन्दर—इज्ज़त का त्याग ?

रजनी—नही . इज्ज़त जायेगी इस झूठे डर का त्याग।

सुन्दर—शाबास रजनी। मुझे ऐसी ही शिष्या चाहिए। तुम जैसे .कला जैसे चार आत्मीय व्यक्ति मुझे सहारा दे तो कला के बल पर यह ससार जीत कर दिखा दूँ ।

रजनी—फिर है तो हम ? हमने तो हिम्मत नही हारी है न? फिर आप क्यो हिम्मत हार रहे हैं ?

सुन्दर—हारता नही रजनी, मै हिम्मत नही हारता। मै डरता हूँ, . .तुम लोगो की इज्जत के लिये डरता हूँ। यह कलाकार का जीवन... हमेशा रहस्यमय। जितना खुला है उतना ही छिपा हुआ है। दुनियादार ससार इस जीवन से परिचित नही। और इसी अपरिचय का यह परिणाम हो रहा है ।

रजनी—दुनिया को हम अपना विश्वास-पात्र बनायेंगे।

सुन्दर—बडा मुश्किल है !

रजनी—क्यो ?

सुन्दर—क्यो ! कैसे बताऊँ तुम्हे ?

रजनी—कुछ न बताइये। यह चर्चा भी न कीजिए। ऐसी चर्चा करते बैठने से काम मे बाधा उपस्थित होती है।

सुन्दर—यह ठीक है पर आज तक मुझ से ही भूल हुई। चर्चा करता बैठा .बहस की इन लोगो से, जिसके कारण इन्हे ठिठोली करने का मौका मिला . पर उस समय दूसरा उपाय न था। वह बहस न करता तो आज तुम जैसी शिष्याएँ न मिलती ! **(निश्वास छोड़ कर)** एक ही बात का दु ख होता है कि मुझे कोई शिष्य नही मिलता।

रजनी—अभी भी भेद है मन मे ?

सुन्दर—भेद ! काहे का भेद ?

रजनी—स्त्री पुरुष भेद, जाति का अभिमान है मन मे पुरुष जाति का अभिमान। है न ? पुरुष शिष्य चाहिए। यही न ?

सुन्दर—क्षमा करो रजनी। (**एक ओर जाकर बैठता है। रजनी उठती है और बोर्ड पर के चित्र की ओर देखती रहती है। वह फिर से रजनी की ओर आता है**) रूठ गई रजनी !

रजनी—नही, मुझे दु ख हुआ। ऐसी भावना क्यो कर ? आप आप भी ऐसा कहे। फिर लोगो को दोष क्यो दिया जाए ! लोग जो निन्दा करने लगते हैं वह इसी भावना के कारण। नही। यह वृत्ति आप में न होनी चाहिए थी। क्यो ?

सुन्दर–अब और कितना लज्जित करोगी मुझे ! तुम कल्याणी मन्दा और कुन्दा . तुम सभी मुझ पर अभिमान करती हो मेरे लिए झगडती हो। और मै कहता हूँ शिष्य चाहिए। क्षमा करो रजनी मै बहुत बडा अपराधी हूँ। इसीलिए तो मुझे यश नही मिलता। मन मे से पहले यह स्त्री-पुरुष भेद जाना चाहिए। कृतघ्नता का पुरस्कार मिल रहा है मुझे। .. मिल गया. यश का रहस्य मुझे मिल गया अब। कितना अधा था मै। **(कल्याणी आती है)** आओ . कला **(रजनी से)** मुझे क्षमा कर दो। **(कल्याणी से)** मै कहाँ गल्ती कर रहा था यह मुझे पता लग गया।

कल्याणी—कहाँ क्या गल्ती कर रहे थे ?

सुन्दर—कही भी गलती करूँ ..कुछ भी गलती करूँ वह भेद अब नही रहा . एक दम घुल कर साफ हो गया। जो करना स्वयं ब्रह्मा के लिए सम्भव न हो सका वह अब मै प्रत्यक्ष कर दिखाता हूँ। **(वह एक ओर बैठ जाता है। कल्याणी रजनी की ओर देखती रहती है—रजनी केवल हल्के से हँसती है। कल्याणी सुन्दर की कुर्सी के पीछे खड़ी होकर कहती है)**

कल्याणी—ब्रह्मा को मात कीजिएगा ?

सुन्दर—हाँ।

कल्याणी—कैसे ?

सुन्दर—(हँसता है) अब देख लेना।

कल्याणी—**(क्षण भर ठहर कर)** चित्र चले गये न पेरिस ?

सुन्दर—कभी के।

कल्याणी—स्वीकृत हो गए ?

सुन्दर—कौन जाने। अब मुझे पर्वाह नही।

कल्याणी—तो भेजे क्यो ?

सुन्दर—इसलिए कि उस समय मे मूर्ख था।

कल्याणी—तो अब अकल आ गई है शायद! क्यो ? किसने सिखाई।

सुन्दर—रजनी ने।

कल्याणी—यह बात है। **(कुछ देर सब चुप रहते है)** जाऊँ ?

सुन्दर—मैने तुम्हे नही बुलाया था।

कल्याणी—अच्छा ? फिर क्यो आई मै ?

सुन्दर—रजनी से पूछो, वह बतलाएगी . वह भली-भाँति जान गई है यह ससार की पहेली।

कल्याणी—क्यो रजनी ? **(रजनी चुप रहती है। कल्याणी उसके पास जाती है)** क्यो रजनी ?

रजनी—क्यो लज्जित करते हो मुझे ! क्या अपराध हुआ है मुझ से ? मैने इतना ही कहा (**रुकती है**)।

कल्याणी—क्या कहा ?

रजनी—स्त्री-पुरुष . भेद यह भेद भावना हमे मार रही है. हमें चित्रकारो को (**उठकर एक ओर जाकर बैठ जाती है।**)

कल्याणी—(**स्वगत**) स्त्री-पुरुष भेद !. यह भेद न रहने से इस दुनिया में रह ही क्या जायगा ?

रजनी—शून्य !

सुन्दर—शून्य ! कलाकार जिस नई सृष्टि का निर्माण करता है वह शून्य से ही। यह मै अभी तक नही जानता था। यह घटाना मुझे नही आता था। मै नही जानता था कि पुरुष मे से स्त्री घटा देने पर शेष शून्य रह जाता है। हिसाब की यह समस्या हल होते ही ससार का रहस्य मेरी मुट्ठी मे आ गया, अब देखो, वह दैवी भावना नष्ट हो गई। अब मै दैत्य बन गया हूँ। इसी दैत्यपन के बूते पर मै सब देवताओ को जीतूँगा। समझी ?

रजनी—दैवी भावना मिट गई।

कल्याणी—दैवी-भावना, प्रेम की, शुद्ध प्रेम की दैवी-भावना !

रजनी—नही . स्त्री-पुरुष के भेद की भावना। ईश्वर ने उत्पन्न की हुई भावना। वह भावना ईश्वर ने उत्पन्न की, मनुष्य ने उसे धारण किया और वही मनुष्य का अध पतन हुआ। ईश्वर की भावना मनुष्य नही समझ पाया। मनुष्य अपने को देवता समझने लगा, पर वह देवता न था देवता बन भी नही पाया था इसलिए उनका अध पतन हो गया।

सुन्दर—बिल्कुल ठीक। वह देवता की बराबरी करने लगा इसी लिये उसका अध पतन हुआ। मनुष्य देवता से भी बडा है। अपना स्थान छोडकर वह नीचे उतरा। उसे अपना बडप्पन दिखाना चाहिए था। देवताओ की हड्डी नरम करने वाला दैत्य बनना चाहिए था...

रजनी— नही ।

सुन्दर—नही, फिर क्या गुरु महाराज ?

कल्याणी—अब यह समाप्त भी कीजियेगा ? कैसा विषय चलाया है यह आज ?

सुन्दर—आज यह बडे महत्त्व का विषय चल रहा है। समझी कला ? सारा ससार अपनी ओर देखने लगा है । मेरी ओर तुम्हारी ओर . और इसकी ओर ! और बाते करने लगा है मीठी-मीठी बाते । उसे उसे मीठे से उत्तर देना चाहिए न ? उसी के लिए यह चर्चा चल रही है !

कल्याणी—रजनी, यह और क्या पागलपन पैदा कर दिया है इनके मस्तिष्क मे ? (**रजनी हँसती है**) हँसती क्या हो ? क्या मेरे जीवन को मिटाने का तुम्हारा इरादा है ?

सुन्दर—और मेरा जीवन ?

कल्याणी—मेरा जीवन वही तुम्हारा जीवन है . ।

सुन्दर—यह केवल कहने की बाते हैं। बिना समझे बोलना है, कहीं किसी कवि ने लिखी हुई पत्तियाँ कभी याद कर ली थी उन्ही को अब दुहरा रही हो।

कल्याणी—यह कह क्या रहे हैं आप ! मैने पिता की भी परवाह नही की, अमीरी को ठुकराया, लखपति की गृहणी बनने का सुअवसर छोड कर जो तुम्हारे मूँह की ओर ताकती रही हूँ, वह क्या शून्य की यह बाते सुनने के लिए ?

सुन्दर—यदि तुम मुझे चाहती हो तो तुम्हे अब ऐसी बाते सुननी पडेगी। यह पागलपन अब मेरी नस नस मे समा-गया है ठीक तक्षक के विष की भाँति। यह विष मुझे पचाना है मुझे नीलकठ बनना है। किसी को काटूँ तो उस पर भी इस विष का प्रभाव होगा, मै इतना जहरीला बन गया हूँ। ऐसा आदमी स्वीकार है ?

कल्याणी—हाँ ।

सुन्दर—'हाँ' क्या ? यह व्रत इतना आसान नही। बडा कठिन है कला से भी कठिन है।

कल्याणी—यही अब देखना है !

रजनी—अब मै जाती हूँ।

सुन्दर—अब तुम घबरा गई ? गुरुदेव ही घबरा जाये तो शिष्य का क्या होगा ?

कल्याणी—वह गुरु का भी गुरु बन जायगा।

सुन्दर—बिल्कुल ठीक कहा। यह मेरी शिष्या, मेरी गुरु बन गई। अब मै उसका शिष्य हूँ . अब मुझे इसका गुरु बनना है। अच्छा, बैठो वहाँ। (**उसे कोच पर बैठा कर स्वयं उसके निकट बैठता है**) वह बाबूराव ढूँढ रहा है न तुम्हे ? उसे यहाँ आने दो और देखने दो और परेशान हो लेने दो। वह ऑथर (**जोर से हँसता है**) लेखनी के यह मुर्गे. कूडा-करकट लिखते रहते है। चोच पैरो से खोदते रहते है कूडा। . उससे कहो, लाल गुदडी में ही मिलता है। एक बार ढूँढ देखो यह गुदडी। (**बलवन्तराव आता है**) आइए आर्टिस्ट साहब, आपकी पत्नी कहाँ खो गई ?

बलवन्त—बिल्कुल यही अचूक प्रश्न किया तुमने !

सुन्दर—मै जानता था। मेरी बहन वह मुझ जैसी ही घनचक्कर। सोचा, भटक रही होगी कही और तुम उसे ढूँढ रहे होगे।

बलवन्त—तुमने ठीक ही कहा। पर अब तुम ही बताओ, क्या यह योग्य है औरतो के लिए ? क्या औरत जात को यह शोभा देता है ?

सुन्दर—मैं कैसे कहूँ। मै औरत तो हूँ नही। पुरुषो सम्बन्धी प्रश्न होता तो मै उत्तर देता कि पुरुष को सब कुछ शोभा देता है। औरतो के बारे में इन औरतो से ही पूछो।

कल्याणी—जो पुरुषो को शोभा देता है वह स्त्रियो को क्यो न शोभा दे ?

बलवन्त—सुन लीजिए। और आप कह रही हैं। फिर भी अभी

विवाह नही हुआ है। और रजनी ! ना ना यह ठीक नहीं। कितना सट कर बैठी हो। विवाहित स्त्रियो को यह शोभा नही देता। हम लोग घर के आदमी है इसलिए, दूसरा कोई होता तो क्या कहता ?

रजनी—कहता कुछ भी। मुझे इसकी परवाह नही। अपना मन शुद्ध हो तो कोई ससार के कहने की क्यो परवाह करे।

बलवन्त—आज कल तुम औरतो की ज़बान बहुत चलने लगी है।

सुन्दर—अभी हाल ही मे तो मुँह पर का ताला खुला है न !

बलवन्त—अभी पूरा कहाँ खुला है ?

सुन्दर—इतने मे ही इतनी बकबक। बडी मजेदार बात है, क्यो ? फिर से यह ताले बन्द कर देने चाहिये। क्यो .!

बलवन्त—मेरी परीक्षा ले रहे हो पर मै धोखे मे आने वाला नही।

कल्याणी—अच्छा ? फिर इतने मतवाले क्यो हो रहे है बिचारी कही इधर-उधर चली गई तो आपकी इतनी जान क्यो सूख रही है।

बलवन्त—पति का दु ख पति ही जानता है।

सुन्दर—सुन लो कला, इसीलिए मै कहता हूँ (**रुकता है**)।

बलवन्त—क्या कहते हो !

सुन्दर—अभी समय नही आया वह बताने का।

बलवन्त—प्रत्येक व्यक्ति पहेलियो में बाते कर रहा है।... (**मंदा कुन्दा आतीं हैं**) अब ये छोकरियाँ भी तत्त्वज्ञान की बाते करने लगी हैं।

मंदा—सुन लिया मास्टर साहब।

कुन्दा—ठहरो, पहले मै बताती हूँ।

मंदा—नही, पहले मै बताऊँगी (**दोनो बार-बार 'पहले मैं बताऊंगी' कहती हैं। कल्याणी उन्हे दूर करती है**)।

कल्याणी—सुनो तुम दोनो एक साथ कहो .।

मंदा—यह कैसे होगा ? शब्द कैसे मेल खायेगे ?

सुन्दर—न मेल खाने दो। हमे तो सुनाई देगा न ! हाँ कहो।

मंदा—पिता जी कहते है तुम्हारे मास्टर साहब मे इन्सानियत नही है ।

कुंदा—पिता जी कहते हैं तुम्हारा मास्टर सच्चा इन्सान है ।

कल्याणी—समझे, बलवन्तराव ?

बलवन्त—हाँ समझा । (**बड़बड़ाता हैं**) ।

सुन्दर—क्या समझे !

बलवन्त—इसके पिता जी कहते हैं कि सच्चे मास्टर को तुम्हारी इन्सानियत नही । क्यो री, यही न । (**दोनो हँसती है**) शायद गलती की इतना निश्चित है कि कुछ इन्सानियत के बारे मे था ।

रजनी—दो आदमी एक साथ बोले तो सुनने वाला इतना गडबड़ा जाता है फिर सारा शहर जब एक दम बोलने लगता है तब कथन का विपर्याय हुआ इसका गिला कोई क्यो करे ।

सुन्दर—मनुष्यता ! मनुष्यता !

कुंदा—यह मनुष्यता क्या होती है मास्टर साहब ?

सुन्दर—मै यही सोच रहा हूँ ।

मंदा—सच्चा इन्सान कैसा होता है, और झूठा कैसा होता है मास्टर साहब ?

सुन्दर—ठहरो । तुम आर्टिस्ट हो न बलवन्तराव !

बलवन्त—आर्टिस्ट कहाँ । एक पुराने जमाने का चित्रकार हूँ बस !

सुन्दर—ठीक-ठीक...तो पुराने और नए जमानेकी कलाएँ कैसे मिलती है। मेल खाती हैं । .देखना चाहिए । एक चित्र तो बनाओ मनुष्य का। (**बलवन्तराव हँसता है**) हँसो मत । यह बडी कठिन कल्पना है । मेरा सिर चकरा गया है इस कल्पना से । मै भी प्रयत्न करके देखता हूँ । लो, यह लो बोर्ड, और मदा जब तक हम चित्र बनाते हैं तब तक तुम एक अच्छा सा गीत गाओ (**दोनों चित्र बनाने लगते हैं । दोनो लड़कियाँ उनके पीछे खड़ी होकर देखती है । मंदा और कुंदा देखते-देखते गाती हैं**) ।

बलवन्त—(**चित्र दिखाता हुआ**) यह देखो !

सुन्दर—जरा ठहरो .हाँ मंदा रुको नही। (**देखने के लिए आते हुए बलवन्तराव को दूर ठेलते हुए**) ना, ना अभी यह चित्र न देखो।

(**जब वह चित्र बना रहा होता है तब कल्याणी और रजनी परस्पर इशारा करके हँसती हैं। बलवन्तराव परेशानी में एक कुर्सी पर बैठता है।**)

सुन्दर—हाँ, अब देखो।

बलवन्त—तुम्ही देखो!

सुन्दर—(**उसके पास जाकर**) रूठ गए?

बलवन्त—अब समझा। तुम्हारा इरादा इन औरतो के सामने मेरी फजीहत करने का है।

सुन्दर—ऊँ हुँ, फजीहत हुई तो मेरी ही होगी।

बलवन्त—यह मुझ से कह रहे हो!. . ये हैं तुम्हारी शिष्याएँ तुम्हारी अनुयायिनी . सब तुम्हारी सिखाई हुई, भूल हुई, मैं पोछ डालता हूँ यह चित्र! (**उठता है, राह मे सुन्दर उसे रोक कर अपने चित्र के सामने ले जाकर खड़ा करता है**) यह क्या? यह मनुष्य है? (**हँसने लगता है**) यह मनुष्य हैं? फिर हम लोग कौन हैं?

सुन्दर—हम लोग यानी तुम और मैं। इन औरतो को न लाओ इस झमेले में!

बलवन्त—यानी?

सुन्दर—(**उसे उसके चित्र के सामने खींच कर**) यह तुम्हारा मनुष्य है न? फिर इसका इस मनुष्यता से क्या सम्बन्ध है? मनुष्य यानी पुरुष! क्यो?

बलवन्त—पुरुष? ..क्या कहा मनुष्य यानि पुरुष?

रजनी—और हम लोग शायद मनुष्य नही है?

बलवन्त—(**जरा सम्भल कर**) पर यह क्या? पुरुष भी नही स्त्री भी नही, यही नही, मनुष्य भी नही, सींग क्यो है इस मनुष्य को?

सुन्दर—चुभोने के लिए। दूसरो का पेट फाड़ने कै लिए!

बलवन्त—यह तो विलायती शैतान है ।

सुन्दर—विलायती नही, देसी है । बिल्कुल आर्यावर्ती मनुष्य है । यह आर्यावर्ती मनुष्य विलायत गया, बाइबिल मे घुसा, नन्दन बन में उत्पात मचा कर जिसने मनुष्यता का पौरुष बनाया, वही है यह आदम ! यह आदि देवता का महा देवता का चित्र है !

बलवन्त—महादेव तो मनुष्य नही । यह विचित्र रूप कोई देख ले तो (**विश्वासराव आता है**) आइये विश्वासराव, देखिये यह सुन्दर का मनुष्य देखिये । इसकी मनुष्यता मे स्त्री शामिल नही ।

विश्वास—स्त्रियो में मनुष्यता होती कहाँ है !

रजनी—सुनो कला, यह कलाकार कह रहा है । और ये हमारे हिमायती हैं !

विश्वास—अजी ये चित्र अभी रहने दीजिए . (**रजनी से**) यहाँ हो तुम ? ठीक है । वह बिचारा बाबूराव वहाँ घायल होकर पडा है । . .

रजनी—क्या हुआ ?

विश्वास—कुछ खास नही, मामूली जखम है ।

रजनी—जखम ? कैसी ! कहाँ हुई है ?

विश्वास—(**सीने को हाथ लगा कर**) यहाँ !

रजनी—(**घबरा कर**) हाय, राम !

विश्वास—नजर आने वाली नही जखम अन्दर हुई है, मामूली, बिल्कुल मामूली । मोटर से नहीं . ट्राम से नही, बस से नही चाकू छुरी से भी नही । (**रुकता है**) ।

रजनी—तो काहे से ?

विश्वास—कर्म से !

रजनी—कैसे कर्म से ?

विश्वास—तुम्हारे कर्म से ! .शरम नही आती ? पराये आदमी

के साथ अकेली घूमती हो .पति को छोड़े फिरती हो। वह बिचारा तड़प रहा है। उस आँथर ने बताया . ।

रजनी—अच्छा!

बलवन्त—अच्छा, कहती हो। उसने क्या गलती की! वह आँथर है। दुनिया को देख सकता है। वह जैसा दुनिया को देखता है वैसा कहता है ।

रजनी—उसे जैसा दिखाई देता है वैसा वह कहता है। पर उसे जो दिखाई देता है क्या वह ठीक होता है ?

कल्याणी—बोलिए न ? किसके देखने पर विश्वास किया जाय ? कैमरा के या आर्टिस्ट के ?

विश्वास—देखो, इस कदर शोर न मचाओ। शोर मचाने से बात का समर्थन नही होता। तुम लोग औरते हो। अपने पतियो के पास रहना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम क्यो कर इन कलाओ में पडती हो!

बलवन्त—कला की ओट चाहे जिस व्यक्ति के साथ मटर गश्ती करने के लिए। इसी लिए मैंने एक सीधी सी पत्नी स्वीकार की।

विश्वास—पर वह भी है कहाँ तुम्हारे कहने मे ? वह घूम रही है उधर एक कलाकार के साथ।

बलवन्त—किसके साथ ?

विश्वास—बाबूराव के साथ।

बलवन्त—बाबूराव के साथ। बाबूराव के साथ। किसने कहा! और वह कलाकार कहाँ है ?

विश्वास—आँथर ने कहा। वह गाता है न ? उसका गाना सुनती बैठी होगी कही। तब तक उसकी यह पत्नी यहाँ चित्र बना ही रही है! कहते हैं मनुष्य!

सुन्दर—यह उसने बनाया हुआ चित्र नही है ।

विश्वास—बनाया न होगा देखती बैठी होगी। बात एक ही है।

अच्छा ही हुआ जो मेरी पत्नियाँ मर गईं। यह जजाल तो नही है गले मे।

मंदा—सुन लिया मास्टर साहब—

विश्वास—और ये जरा सी छोकरियाँ ये भी यही है ?

कल्याणी—कुछ हृदय भी है आपके पास ? या दृष्टि मे केवल पाप ही पाप भरा हुआ है ? यह कैसा स्वभाव है ? कोई कही न जाय, किसी से बात न करे क्या यही आपका कहना है ?

विश्वास—कोई, नही .स्त्रियाँ। 'किसी से' नही पुरुषो से, समझी ?

नट—(**प्रवेश करके**) स्त्री जाति सब बेईमान है।

सुन्दर—हैं, हैं, ठहरो, तुम मे एकदम यह टीस कैसे उठी ?

नट—क्या करूँ जी ! हृदय फटा जा रहा है। दूसरे का दु ख अपना दु ख है दूसरे के लिए, अपने मित्र के लिए अपने गुरुदेव के लिए क्या मुझे व्याकुल न होना चाहिए ?

रजनी—आपका गुरुदेव कौन है ?

नट—तुम।

रजनी—मै ?

नट—ठहरो सुनो, तुम्ही इस सारे दु:ख की जड हो ! मेरा मित्र मेरा गुरु मेरा बाबूराव उधर छटपटा रहा है ।

विश्वास—रमणी को साथ लिए ।

नट—सुनो, पहले सुन लो अच्छी तरह से सुन लो ।

बलवन्त—रमणी को साथ लिए ।

नट—कह रहा हूँ कि सुन लो। और उसी समय यह यहाँ ।

बलवन्त—तुम से किसने कहा ?

नट—कवि ने . उस अतीन्द्रिय दृष्टि वाले ने ससार पर नजर डाली। उस दृष्टि चक्र मे उसने देखा. (**कुन्दा और मंदा हँसती है**)। पगली लडकियो, हँसो मत।...यह हँसने की बात नही। खून के आँसू रो रहा है उसका कोमल हृदय। उस रक्त के फव्वारे इस ससार के मार्ग पर

गिर पड़े है। उन फव्वारो की वर्षा से ससार जलने लगा है । सुनो कुदा

नट—हॉ, ठहरो क्या कह रहा था मै ?

सुन्दर—कुछ मत कहो चले जाओ यहा से। कीचड उछाल रहा है हर कोई। कैसी है यह दुनिया !

नट—सुनो, आगे सुनो ।

सुन्दर—निकलो यहाँ से, नही तो धक्के देकर बाहर निकाल दूँगा।

नट—हर, हर ! हे स्वर्ग के देवताओ !

कुदा—इनकी पुकार का जबाब दो ! **(सब हँसते हैं नट घबराता है, इधर-उधर देखता है और 'प्रतिशोध' प्रतिशोध .प्रतिशोध, कहता हुआ चला जाता है)।**

कुंदा—ये एक-एक कैसे पागल हैं ?

मन्दा—और इन लोगो की तारीफ समाचार-पत्रो मे आती है।

विश्वास—चुप रहो। बडे आदमियो की बातो मे छोटो को मुँह नही डालना चाहिए। समझे सुन्दर . **(रुकता है)**

सुन्दर—क्या ?

विश्वास—मेरे विचार मे तुम यह क्लास बन्द कर दो ।

सुन्दर—और जीविका कैसे चलाऊँ ?

विश्वास—जरा आदमियो जैसे चित्र बनाओ। **(बोर्ड की ओर इशारा करके)** इस तरह का बाहियातपन छोड दो। यह तुम्हारा बहनोई दयनीय सूरत बना कर बैठा है। क्यो ? क्या कारण है ? उस कारण की उत्पत्ति कहाँ से हुई ? पहले इस बात का विचार करो और यह रासक्रीडा बन्द करो भाई।

सुन्दर—उपदेश समाप्त हो गया ? जाइए, नमस्कार !

विश्वास—अरे लेकिन . ।

सुन्दर—नमस्कार ! **(बाबूराव और रमणी आते है)**

विश्वास—आइये बाबूराव .यह देखिये आपकी

बलबन्त—(क्रोध से) कहाँ गई थी इसके साथ ?

बाबूराव—(रजनी से) यहाँ क्या कर रही थी तुम ?

रजनी—अकेली नही थी मै यहाँ।

बलवन्त—(रमणी से) तुम्हारे लिये आज से यह घर बन्द. .

रमणी—मेरे भाई का घर ?

बाबूराव—कैसा भाई ? कोई किसी का भाई नही और कोई किसी की बहन नही। यह भी रिश्ता जोडती है भाई का...और गुरु का... और न जाने काहे का ! चोर साले हरामखोर ! कला के नाम पर अंधेर मचा रक्खा है। नगी अधनगी इकट्ठी करने की आदत लग गई है और फिर भला ऐसे कामो से नीति कैसे बनी रह सकती है ? बहुत हुई यह कला ! आज से यह कला बन्द ! समझी ! चित्र नहीं बनाने होगे। न नगे और न वसनधारी। सब बन्द ! चलो।

रजनी—मै नही आती।

बलवन्त—तुम भी चलो !

रमणी—मुझे अपने दादा से बाते करनी हैं।

बलवन्त—दादा गया जहन्नुम मे। चलो निकलो ! नही तो—नही तो—और तुम भी छोकरियो अपने-अपने घर जाओ।

मन्दा—आप कौन होते हैं हमसे कहने वाले ?

कुन्दा—हम जायेगे या रहेगे, जो चाहेगे करेगे !

बाबूराव—(रजनी से) देखा ? यह है तुम्हारी शिक्षा। तुम्हारा चाल-चलन देखकर ये छोकरियाँ भी बेमुरव्वत बन गई हैं। चलो, चल रही हो या नही ?

रजनी—नही आती।

विश्वास—यह ठीक नही। समझी ! इसका बहुत बुरा परिणाम होगा।

रजनी—जो होना है वह एक बार हो जाने दो। हममें से कोई भी नही जायगा। जाइये।

बाबूराव—यह बात है ?

बलवन्त—यह बात है ?

विश्वास—अब देखना

बाबूराव—चलिये विश्वासराव चलिये बलवन्तराव इस बात का फैसला अब करना ही होगा !—सुना सुन्दर, तुम्हे मुँह दिखाने के लिए जगह न रहेगी। चलिये। देखना अब कैसे इनको सीधा करता हूँ। **(तीनो जाते है)**।

सुन्दर—**(एकदम बैठ जाता है)** नही नही चाहिये यह जीवन।

कल्याणी—यह आप कह रहे हैं ?

सुन्दर—कितना सहन करूँ ! सीमा होती है सहनशीलता की। यह मनुष्य का चमडा कितना सहन करेगा ?

रजनी—पर हम तो तैयार है न ?

सुन्दर—झूठ है यह। जितना दिखाई देता है उतना यह आसान नही है। बहुत हुआ। जी चाहता है .।

कल्याणी—कुछ नही चाहता। जो होना हो वह हो जाने दो। किसी की कुछ परवाह न करो।

सुन्दर—एक ही कारण स्त्री-पुरुष भेद। किस चाडाल न यह भेद निर्माण किया ?

रमणी—दादा, यह तुम कह रहे हो ? तुम सा धैर्यवान् व्यक्ति...

सुन्दर— . .

(पर्दा गिरता है)

तीसरा अंक

[सुन्दरराव का स्टूडियो पर्दा उठते समय सामान झाडता हुआ कृष्णा भीतर जाता है। बाहरी दरवाज़े से रजनी आती है और अन्दर चली जाती है क्षण-भर वहाँ कोई भी नही होता। बाद में कल्याणी आती है। स्टूडियो में किसी को न पाकर भीतरी दरवाज़े में झाँक कर' रमणी, कह कर पुकारती हैं। अन्दर कोई भी उत्तर नही देता। अन्दर जाने का विचार करती हुई फिर लौट पड़ती है और बाहर जाने लगती है तभी बाहर से आती हुई रमणी उसे दरवाजे में मिलती है। रमणी के हाथ में भरा हुआ थैला है जिसमें से बाहर झाँकती हुई सब्जी दिखाई पड रही है]

रमणी—कब आई ?

कल्याणी—अभी-अभी। तुम्हे आवाजे दी पर अन्दर से किसी ने उत्तर नही दिया। शायद कृष्णा भी घर मे नही है। इस प्रकार घर खुला छोड कर चले जाते हो, चोरी हो जाय तो .।

रमणी—काहे की चोरी होगी ?

कल्यणी—क्यो ? क्या यहाँ के ये चित्र कम कीमती हैं ?

रमणी—पर इतने बडे ये चित्र कोई चोर क्यो ले जाने लगा ? और ऐसी चोरी किसे पच सकती है ! रसद इस प्रकार यो रोज लानी पडती है। कपडा-लत्ता भी जरूरत के हिसाब से ही आता है। चोर को क्या मिलेगा इस सुन्दरता के राज्य में ? . ठहरो हँ, यह अन्दर रख आती हूँ।

कल्याणी मै भी आती हूँ। (**दोनो अन्दर जाती हैं**)

(विश्वासराव और बलवन्तराव आते हैं, ऐसा लगता है मानो विश्वासराव बलवन्तराव को जबर्दस्ती खींच कर ला रहा है)

विश्वास .आओ .यहाँ बैठो, तुम नौजवान लोग ऐसे कब तक रूठे रहोगे ? कहो, मायके में रहना बहुत हुआ और लिवा जाओ। मायके मे आई हुई पत्नी बिना बुलाये पति के यहाँ न जायगी। यह पुराना दस्तूर है, इसलिये बुलावा भेजना ही चाहिये। एक ही शहर मे हो इसलिये स्वय जाना सब से अच्छा। क्यो ?

बलवन्त .बड़े आदमी के शब्द का अनादर न करना चाहिये इसलिये में आया, पर सच कहता हूँ विश्वासराव कि दूसरी बार उसका मुँह देखने की भी मेरी इच्छा नही। बाबूराव ने भी यही तय किया है। मगरूरता की भी कोई हद होती है या नही ?

विश्वास .ऐसा चलता ही रहता है। अरे भाई यह प्रेम कलह है। झगडे बिना प्रेम मे मजा नही आता। अब जितना झगडना था वह हो चुका। प्रश्न तो अब यह है कि गम कौन खाय ?

बलवन्त—हाँ !

विश्वास—ठीक है। मान दोनो को है ..वैसे देखा जाय तो मस्ती भी दोनो मे है।

बलवन्त—ना, ना, यह मुझे स्वीकार नही।

विश्वास—अस्वीकार करने से कोई फायदा नही . मस्ती दोनो में है .. जरा ठहरो, पहले सुन लो, उन औरतो के सामने मै ऐसा नही कहूँगा। ये अपनी वैयक्तिक बाते हैं। इस वैयक्तिक बातचीत मे सच बाते स्वीकार करनी चाहिए, समझे ! इसलिए मै आया हूँ। तुम दोनो मे से किसी को भी झुकने की आवश्यकता नही। मै सारा फैसला कर देता हूँ। बाबूराव भी मिलना चाहिए था पर सोचा, पहले कम से कम यह एक प्रकरण मिट जाय।

बलवन्त—मै आप से फिर कहे देता हूँ कि मै अपनी मर्जी से यहाँ नही आया हूँ। आप जबर्दस्ती मुझे यहाँ लाए हैं। आप बडे है इसलिए मैंने

आपका कहना माना और यहाँ आया। बस, अब आपका बडप्पन समाप्त हुआ, अब मै अपना मुखतार हूँ। इसके पश्चात् मै आपकी एक न सुनूँगा।

विश्वास—अच्छा। अच्छा। आगे की आगे देखी जायगी। मेरे शब्द के लिए तुम आए. .मेरी इज्जत रख ली . इसी में मुझे आनन्द है। अरे हमारी गृहस्थी बैठ गई इसलिए हम चाहते हैं कि कम से कम तुम्हारी गृहस्थी अच्छी तरह चलती रहे। वह सुन्दर एक मूर्ख व्यक्ति है। उसके कारण तुह क्यो अपने आपको परेशान कर लेते हो ?

बलवन्त—(इधर-उधर देखकर) शायद वह यहाँ है नही। सभी उसके कारण परेशान है। वह तो है फकीर और हम हैं गृहस्थी वाले .. पर उसकी मूर्खता के कारण हमारी गृहस्थी का सत्यानाश हुआ जारहा है। फिर भला परेशान न हो तो करे क्या ?

विश्वास—अपने को परेशान करने से तो उसे दड नही मिलता। उसका सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है। अनुयायी बढ रहे हैं। गोकुल बना रखा है भाई ने। अब तुम लोग यदि चुप बैठे रहे तो नुकसान किसका होगा। इसलिए मै कहता हूँ **(अन्दर कुछ गिरने की आवाज आती है और दोनों घबराकर खड़े हो जाते हैं)** क्या हुआ ?

बलवन्त—क्या हुआ ? **(कृष्णा अन्दर से आता है और उनके सामने से होकर बाहर जाने लगता है। उसके हाथ में एक फ्रेम है)** तो तुम हो।

कृष्णा— (बाहर जाते-जाते दरवाजे के पास ठहर कर) किसे कह रहे हो।

विश्वास—तुम्हे तुम्हे। तुम्हे दिखाई नही देता हम यहाँ हैं। सीधे चले जा रहे हो हमारे सामने से। जैसे कोई लाटसाहब का बच्चे हो।

कृष्णा—हाँ, हाँ। अब मै वह नही रहा जो पहले था। बहुत बडा आदमी हो गया हूँ। समझे।

विश्वास—देख लिया मुँह बडे आदमी का। अच्छा तुम्हारा मालिक कहाँ गया है ?

कृष्णा—कैसा मालिक ! मै ही यहाँ का मालिक हूँ। क्या रोज-रोज बतलाऊँ ? **(कह कर चला जाता है)**

बलवन्त—जैसा मालिक है वैसा ही नौकर है। जब मालिक मूर्ख होता है तब नौकर इसी प्रकार मिजाज दिखाने लगता है। .शायद यहाँ कोई है नही। मालूम होता है सभी बाहर गए हुए हैं। अब कब तक बैठा जाए यहाँ ? **(बाबूराव आता है)** आइए .आप भी आ गए !

बाबूराव—नही मै नही आया। पचास बार इस बुड्ढे ने मेरा दिमाग चाटा। पत्नी पत्नी ! केवल पत्नी के लिए सिर झुकाये बुलावे भेजना मुझे पसन्द नही, पर सोचा उमर मे बडा है, बुला रहा है, इज्जत रखनी चाहिए।

विश्वास—खूब ! जैसे मेरे ही कहने से आये है आप ! और आप स्वय औरतो के लिए जैसे लालायित हैं ही नही !

बाबूराव—कौन कहता है कि मै हूँ ?

बलवन्त—हे ! हे ! कौन कहता है यह ?

विश्वास—**(जोर से हँसते हुए)** अच्छा भाई। छोडो, समझ लो मैं ही कहता हूँ। किसी तरह एक बार तुम्हारे घर बस जाने दो।

बाबूराव—घर बसने दो। घर बसाने के लिए क्या वही पत्नी चाहिए ? अभी मुझ मे एक दर्जन औरतो से विवाह करने की हिम्मत है ।

बलवन्त—यह ठीक है, एक के भरोसे इतना ऐश हो रहा था .. दर्जन से बारह गुना होगा।

बाबूराव—और तुम ? तुम्हारी तो नही कमा कर लाती। इसीलिए ऐसा कह रहे हो।

विश्वास—अब चुप भी रहोगे। नही तो अभी आजाएगी कोई। अब यों बैठो तो सही बैठो **(उन्हें जबर्दस्ती बैठाता है और स्वयं**

बैठता है। तभी कल्याणी अन्दर से आकर सीधी बाहरी दरवाजे की ओर जाती है) अरी ओ! ठहरो तो, इतनी देर अन्दर ही थी शायद! क्या कर रही थी? अकेली थी या इतनी देर से हम लोग बाते कर रहे हैं वह सुना नही शायद?

कल्याणी—(**दरवाजे के पास ठिठक कर, पीछे देख कर**) बस, कह लिया! अच्छा अब मै जाती हूँ। **(एकदम जाती है)**

बाबूराव—कैसी विचित्र लडकी है। उत्तर भी नही दिया!

बलवन्त—हम लोग यहाँ बैठे है, बातें कर रहे है, अन्दर नौकर था, यह थी, पर किसी ने भी ध्यान नही दिया हमारी ओर! प्रत्येक व्यक्ति आता है और सीधा चला जाता है। यह सब सदेहजनक नही लगता आप लोग को?

बाबूराव—और भी हैं कोई अन्दर! आइये देखे तो सही।

(तीनो अन्दर झाँकने लगते है तभी बाहर से सुन्दर प्रवेश करता है)

सुन्दर—कौन है? **(तीनों चौंक कर पीछे मुडते हैं)** वाह! विश्वास-राव, यह क्या हो रहा है। . मेरी अनुपस्थिति मे मेरे घर मे घुसकर .

विश्वास—**(जोर-जोर से हँसते हुए उसके सामने आकर)** वाह, सुन्दरराव इतनी देर हमने तुम्हारा घर सम्भाला और . ।

सुन्दर—मेरा घर सम्भालने की किसी को जरूरत नही। और आप लोग, जी, आप यहाँ क्या कर रहे थे?

बलवन्त—लीजिए, सुनिए विश्वासराव।

सुन्दर—सुनना क्या है? आपका यहाँ काम क्या है?

बाबूराव—काम? सुन्दरराव, मेरी पत्नी कहाँ है?

बलवन्त—सुन्दरराव, मेरी पत्नी यहाँ है। वह कब वापिस आएगी अपने घर?

(सुन्दरराव ज़ोर-जोर से हँसता हुआ एक कोच पर आड़ा लेटता है)

बाबूराव—हँसने की क्या बात है? मेरे प्रश्न का साफ-साफ उत्तर दो। कहाँ है मेरी पत्नी?

सुन्दर—स्वयं पति ही अपनी पत्नी का ठौर ठिकाना दूसरे से पूछने लगे तो उसे कुछ उत्तर न देना ही ठीक है।

विश्वास—(एक कुर्सी खींच कर सुन्दरराव के पास बैठते हुए) अब यो देखो सुन्दर ।

सुन्दर—(तड़ाक से उठ कर) बस कीजिए, मुझ से किसी का कोई सम्बन्ध नही। प्रत्येक ने अपनी जिम्मेवारी स्वय देखनी चाहिए। इन्ही लोगो ने तो उन्हे निकाल दिया, चाहे जहाँ जाने के लिए कहा, बेचारी औरते, आज्ञाधारक होती है न औरते! उन्होने इनकी आज्ञा का पालन किया।

बलवन्त—अब फिर से हम आज्ञा दे रहे हैं।

सुन्दर—किसे ?

बलवन्त
बाबूराव } उन्हे अपनी पत्नियो को।

सुन्दर—तो दीजिए उन्हे आज्ञा। मुझे क्यो बता रहे हैं ?

विश्वास—देखो सुन्दर, ऐसी टेढी बाते न करो, विपत्ति पडने पर मनुष्य घबरा जाता है, ऐसे समय बुद्धिमान् आदमी को उसे ठीक रास्ते पर लाना चाहिए। पति पत्नी के बीच इस प्रकार का रोडा अटकाना ठीक नही, कहाँ हैं वे, मै कहता हूँ उनसे। यही रहती हैं न वे! यह तुम्हे शोभा नही देता। एक तुम्हारी बहन है .पर दूसरी से तुम्हारा क्या सम्बन्ध! उसे क्यो यहाँ रहने दिया ?

सुन्दर—आप यह कैसे कहते है कि वे यहाँ है!

बाबूराव
बलवन्त } हमें पक्का पता है।

सुन्दर—शायद इसीलिए अन्दर झाँककर देख रहे थे ! यह चोरी क्यो ? मेरे यहाँ होते यदि आप आते, सीधी तरह मुझ से पूछते तो मैं जो बताना था वह बताता। मै घर मे नही हूँ यह देख कर चोर की भाँति घर मे घुसे ।

विश्वास—अच्छा, अच्छा हम से भूल हुई।

सुन्दर—तो भोगिए इस भूल का फल। पहले मेरे घर से बाहर निकलिये।

बाबूराव—जरा सुन तो लो।

सुन्दर—एक शब्द भी नही सुनूगा मै इस समय! फिर आइये, फिर से पूछिये। जब में घर पर हूँगा तब आइए। समझे! नमस्कार। **(अँगुली से दरवाजे की ओर सकेत करता है तीनो बिना कुछ बोले चुपचाप चले जाते है)** कृष्णा! ओ कृष्णा! **(झुँझला कर जोर से)** कृष्णा! कहाँ गया यह चोर **(रमणी और रजनी निकल कर बाहर आती है)**

रमणी—क्या है दादा!

सुन्दर—तुम अन्दर थी! **(रजनी से)** और तुम भी!

रजनी—**(हँसकर)** जी, मै भी। और कल्याणी भी।

सुन्दर—वह कहाँ है। **(भीतरी दरवाजे की ओर जाता है)**

रजनी—**(हँसकर)** वह अन्दर छिपी नही बैठी है। आपको ढूँढने गई है। यह तीनो का गुट जो आया था।

सुन्दर—उन्ही के सामने से गई? कुछ कहा सुनी तो नही हुई?

रमणी—वह एक शब्द भी नही बोली। और सीधी निकल गई उनके सामने से।

सुन्दर—**(एकदम कुर्सी पर बैठकर)** मुझे क्यो हो यह परेशानी तुम लोगो के कारण? चली जाओ तुम अपने-अपने पतियो के पास। **(दोनो हँसती हैं)** तुम्हे हँसी आती है। पर लोगो के ताने मुझे सहने पडते हैं। और वह, वह भी मेरे पीछे यो ही हाथ धोकर लगी है। तुम्हारी विडम्बना प्रत्यक्ष देख रही है फिर भी मेरे पीछे लगी है। घर में सब कुछ पर्याप्त है पर क्यो वह दरिद्रता के लिए लालायित हो रही है? **(दोनो हँसती है। सुन्दर उठकर उनके सामने खड़ा हो जाता है)** अब भी हँस रही हो! वे तुम्हारे पति उधर तुम्हारे लिये छटपटा रहे हैं, फिर भी तुम हँसती हो!

रजनी—यही तो उसने देखा।

सुन्दर—किसने !

रजनी—उसने . कल्याणी ने। उसने देखा, कुछ भी हो परप ति-पत्नी के लिये छटपटता है इसीलिये वह आपके पीछे पडी है।

सुन्दर—मै उन जैसा नही हूँ। मै मनुष्य हूँ। मै पुरुष नही हूँ। वे पुरुष जाति के हैं। मै मनुष्य जाति का हूँ। मनुष्य की जाति से अभी किसी का परिचय नही हुआ है। पुरुष स्त्रियाँ सभी मनुष्यता से अपरिचित हैं। इसलिए कोई मनुष्यता को नही पहचान पाता। मनुष्यता की पहचान होते ही पति-पत्नी का नाता जोडना सम्भव न होगा। स्त्री पुरुष का नाता है वह, वहाँ मनुष्यता का सम्बन्ध नही ।

रमणी—शायद अभी तक यही पागलपन तुम्हारे मस्तिष्क में घूम रहा है ?

सुन्दर—(**रजनी की ओर सकेत करके**) इसी ने तो बोया था यह बीज ? अब उसका अच्छा-खासा वृक्ष बन गया है। उसकी शाखाओ ने मुझे चारो ओर से लिया है। झल्ला गया हूँ मै। कब हल होगी यह पहेली !

रमणी—देखो दादा, अब जरा, मनुष्यो मे आ जाओ। हम सीधे-सादे लोगो की भाषा मे मनुष्य शब्द का जो अर्थ है उस मानी मे मनुष्यो मे आ जाओ। दिन पर दिन यह प्रश्न बढता ही जा रहा है। इसे कही न कही रोकना ही चाहिए .।

सुन्दर—फिर जाओ न अपने पति के यहाँ। बुला रहा है न वह ?

रमणी—और यह ?. इसी के लिए न मै आज तक यहाँ रही ? इसकी इज्जत के लिए इसलिए कि कोई इसकी बदनामी न करे ?

सुन्दर—तो उसे भी पहुँचा दो उसके पति के पास।

रमणी—पर वह तो मेरी बात नही मानती ।

सुन्दर—तो तुम जाओ उसे अपने कर्मो के फल भोग लेने दो।

रजनी—जानते हैं, आज कल्याणी क्यो आई थी यहाँ ?

सुन्दर—क्यो आई थी ! .रोज ही तो आती है वह . ।

रजनी—आज वह रोज की भाँति नही आई थी । (**स्तब्धता**) उसके पिता ने आज आखिरी बार उससे कह दिया . (**स्तब्धता**) वह भी हमारी ही भाँति घर छोड कर निकली है ।

सुन्दर—(**जोर-जोर से हँसते हुये**) मजेदार बात है । चारो ओर मनुष्यता फैलने लगी है । तुमने यह विष बोया, वही अब सब को हानि पहुँचा रहा है । यह है हमारा जीवन ! मनुष्य की भाँति रहना मनुष्य के लिए कठिन हो गया है । सर्कस के शेर हाथियो की भाँति समाज कायदों की मार से हमे नचा रहा है । यह सर्कस कब समाप्त होगी ? कौन बताये इन बाघ सिहो को कि तुम भेड नही, बाघ सिह हो, गला काट कर खून पीने वाले बाघ सिंह हो ! यह बात कब उनकी समझ में आएगी ?

रजनी—बन में गये बिना शेर का शेरपन नही जागता । मुर्दे का माँस खाने वाले शेर को अपनी जाति का विस्मरण हो जाता है । इसी लिए किसी ने इसके पिजरे के दरवाजे तोडने चाहिए ।

सुन्दर—कौन और कब तोडेगा ये दरवाजे ? हर व्यक्ति अपनी-अपनी जगह पिजरे मे पडा है । किसी को भी अपनी मनुष्यता की याद नही ! जी चाहता है .(**कल्याणी आती है**) आगई ? आओ ।

रमणी—आओ, बैठो । आगे क्या हुआ ?

कल्याणी—क्या होता ? मुझे जिस घर से निकाल दिया, उस घर में फिर से जाऊँ ? वह अध्याय अब समाप्त हो गया ।

सुन्दर—घर छोड कर भागी हुई औरतो का शायद अब यह असायलम बन जाएगा ?

रजनी—घर छोड कर भागी हुई नही. .घर से निकाली हुई ।

कल्याणी—मेरे लिए यहाँ स्थान न हो तो वैसा बताइये । मै और कही चली जाऊँगी ।

सुन्दर—कहाँ जाओगी ?

कल्याणी—उससे आपको क्या ? मैं यहाँ रहना चाहती हूँ, यही

रहना चाहती हूँ। आप यदि मना करे तो आगे का सोचूँगी।

सुन्दर—इन दोनो के पति आज इन्हे बुलाने आए थे ।

कल्याणी—वह मै जानती हूँ . ।

सुन्दर—तो यदि ये फिर से अपने घर गई .ना, ना, ठहरो अथवा इनके पति कानून के जोर पर इन्हे यहाँ से घसीट कर ले गये, तो फिर भी तुम यहाँ रहोगी ?

कल्याणी—फिर भी का मतलब ?

सुन्दर—इतना भी नही समझती ! यह है इसलिए वह रही बहन है न वह मेरी ! अब यदि ये दोनो चली जाये तो मुझ पर निगाह रखने के लिए यहाँ मुकद्दम कौन होगा ? फिर तुम कैसे रहोगी ?

कल्याणी—मनुष्य की भाँति समझे ! मनुष्य की भाँति ! स्त्री की भाँति नही।

सुन्दर—सुन लो रजनी, यह विष काफी फैलने लगा है। (**रजनी हँसती हैं**) हँसती क्या हो ? तुम लोग हँसोगी पर रोना पडेगा मुझे।

कल्याणी—रोने से डरते हैं। ये हैं पुरुष। लोग कहते हैं पुरुष धैर्यवान् होता है, रजनी। सच तो यह है कि पुरुष कितना दुर्बल है यह हम औरते ही जानती हैं। बाल्यावस्था मे उसे माँ सम्भालती है, हारी-बीमारी मे भी मा बहने ही ख्याल रखती हैं और प्रेम के कारण भी किसी युवती के कधे पर सिर टिकाने के लिए आतुर रहता है यह धैर्य का पुतला। इन लोगो के सहारे हमे जीना होता है। ऐसे दुर्बल प्राणियो के सहारे जीना होता है हम औरतो को ? हँ ।

सुदन्र—(**उठ कर इधर-उधर टहलता हुआ**) मतलब यह है कि तुम भी यहाँ रहोगी और मुझ जैसे दुर्बल व्यक्ति की देखभाल करोगी ?

कल्याणी—जी ।

सुन्दर—और तुम दोनो कब जाओगी ?

रजनी—जब दुर्बल व्यक्ति अपनी देखभाल करने योग्य हो जायगा तब ।

कल्याणी—तो इस तरह शायद सारा जीवन हमे यही रहना पडेगा।

सुन्दर—बिल्कुल ठीक कहा। तो हमारा यह घर-बार इस तरह बस गया क्यो ? अब इसमे तबदीली नही हो सकती ?

रमणी—यह कौन कह सकता है ? वह हम स्वय निश्चित कर लेगी, यहाँ हम और किसी की नही सुनेगी। क्यो री ? ठीक है न ? (**दोनों हाँ कहती हैं**) देख लो, हो गया विश्वास ?

(सुन्दर एक कोने में की कुर्सी पर जाकर बैठ जाता है और एक प्रदीर्घ निश्वास छोड़ता है)।

रमणी—चलो जी, निश्वास छोडने से चूल्हा नही जलेगा। चूल्हा हमी को जलाना होगा। कृष्णा कहाँ गया ?

सुन्दर—अब कृष्णा तुम्हारे हाथ से निकल गया। अब वह बहुत बडा आदमी हो गया है। मुझ से भी अधिक दुर्बल हो गया है। अब तो तुम्ही को उसकी चिन्ता करनी चाहिए।

रमणी—अच्छा-अच्छा, तुम्हारी चिन्ता करेगी, कृष्णा की चिन्ता करेगी, और भी कोई ऐसे ही दुर्बल यहाँ आये तो उनकी भी चिन्ता करेगी। चलोजी। (**तीनो अन्दर जाती है। सुन्दर एक-एक चित्र की ओर देखता हुआ पागल की भाँति सारे स्टूडियो में घूमता रहता है। आँथर आता है**)।

आँथर—वाह ! सुन्दरराव, सोचा पता नही आप मिलते हैं या नही। तो आखिर आपकी तपस्या सफल हो ही गई। सुना है आपको पेरिस का कोई बडा सा पुरस्कार मिला है। बात यह है 'घर की मुर्गी दाल बराबर' हमारे साहित्य के बारे मे भी यही बात है। वह माधवराव पटवर्धन बहुत बडा कवि है, उसका वह निबन्ध यहाँ के परीक्षको ने रद्दी बताया पर कहते हैं उसकी कदर करने वाला कोई पेरिस का ही फ्रेंचमैन निकला। उसकी सिफारिश के कारण माधवराव बम्बई विश्वविद्यालय के प्रथम डी० लिट् हुए। क्या समझे आपको कौन सी डिग्री मिली ?

सुन्दर—पेरिस मे डिग्रियाँ नही होती।

आँथर—कह क्या रहे है। पेरिस मे डिग्रियाँ नही होती ? फिर वहाँ के विद्वान् कैसे पहचाने जाँय ? बिना लेबल के गाहक माल कैसे पहचाने ! ऊँ हुँ, लेबल चाहिये, डिग्री चाहिए, दो-चार अक्षर नाम के आगे लगाने के लिए मिलने चाहिये। केवल गौरव किस काम का !

सुन्दर—डिपलोमा जो मिलता है।

आथर—डिपलोमा घर मे टगा रहता है। उसे गले मे लटकाये तो तो फिरा नही जा सकता। समाचार पत्रो मे नाम के आगे कोई क्या लिखे। नही, नही, तुम्हारी यह सारी मेहनत व्यर्थं हो गई। इससे तो इंग्लैन्ड को ही चित्र भेजते।

सुन्दर—वहाँ उड ही चुकी उनकी धज्जियाँ।

आँथर—क्या ? इग्लैन्ड का भी यही हाल है !

सुन्दर—हमारा हिन्दुस्तान इग्लैंड की परछाई है इग्लैंड के माप-दंड से यहाँ की विद्वत्ता नापी जाती है। कला के विषय मे वे लोग हम जैसे ही निर्बुद्ध हैं। बिलकुल रूढिवादी है। नाविन्य से उन लोगो को एक दम नफरत है इसीलिए कला के लिए हम लोगो को पेरिस इटली की ओर ताकना पडता है।

आँथर—यह बात है ! पर कुछ भी कहिए, डिग्री बिना अपने राम को तसल्ली नही होती। केवल प्राइज लेकर क्या करना है ! बहुत हुआ तो रोम जाईगा और अध्ययन कीजियेगा, वापिस आइएगा पर ससार को यह जानने के लिए कि आपकी विद्वत्ता की डिग्री कितनी बडी है, दो चार अक्षरो की कोई सी डिग्री मिलनी ही चाहिए। यह कुछ नही। पहले आप डिग्री हासिल कीजिए।

सुन्दर—मुझे डिग्री नही चाहिए, प्राइज नही चाहिए . और रोम भी जाने की इच्छा नही, सीखना है तो यही काफी गुंजाइश है। यह सारा जीवन भी उसके लिए थोडा है।

आँथर—तह ठीक है, फिर भी में कहता हूँ जो हुआ वह थोड़ा

नही। अब हमे आपका स्वागत करना चाहिए। मै उसका सारा आयोजन कर रहा हूँ।

सुन्दर—सुनो, तुम इस झझट मे न पडो। तुम्हारे लिए मैने कुछ नही किया है। अपनी तुष्टि के लिए मैने वे चित्र पेरिस भेजे थे। मुझे वे पसन्द थे। यहाँ के आर्टिस्टो को वे पसन्द न थे। हमारे यहाँ के बडे आर्टिस्टो को भी विलायत के आर्टिस्ट बडे दिखाई देते हैं इसीलिए मैंने चित्रो को वहाँ भेजा। बडो के बडो ने उन्हे उत्तम ठहराया, मुझे सतोष हुआ, इससे अधिक मुझे और कुछ भी नही चाहिए।

आथर—यह कैसे हो सकता है। हमारा भी तो कुछ कर्त्तव्य है, क्या वह हमे न करना चाहिए ! यदि यह सब न करे तो दुनिया न कहेगी कि हम अपना कर्त्तव्य करने से चूक गये। यह सब कुछ नही, यह समारम्भ होना ही चाहिए। इस मामले मे हम आपकी कुछ न सुनेगे। (**यह कहता हुआ चला जाता है**)।

सुन्दर—अरे, ठहरो-ठहरो, जरा मेरी बात तो सुनो। हाँ यह है दुनिया। (**फिर से जाकर एक कुर्सी पर आडा लेट जाता है**) अन्दर से नट के कहे हुए 'धन्यवाद ! धन्यवाद' शब्द सुनाई देते है। यह आया दूसरा गधा ! (**नट आता है।**)

नट—धन्य हो ! धन्य हो . !

सुन्दर—चुप रहो।

नट—भारत के आभूषण, हे युवक, सारी भारत भूमि तुम्हारे वैभव के गौरव गीत गा रही है और तुम मुझे चुप रहने के लिये कह रहे हो !

सुन्दर—मूर्ख ने की हुई स्तुति निन्दा से भी अधिक खटकती है

नट—मै मूर्ख ! मै मूर्ख हूँ ऐ ? कलाकार कुल शिरोमणि, कलाकार सुलभ अभिमान से उद्दीप्त होकर.. ।

सुन्दर—कौन कलाकार ?

नट—तुम ! तुम कलाकार। मै. मै कलाकार, क्या एक कलाकार दूसरे कलाकार की महिमा देखकर उद्दीप्त नही होता ?

सुन्दर—तुम कलाकार ?

नट—मैं कलाकार नही ! मै कलाकार नही हूँ तो और कौन है कलाकार ! देखो--मेरी ओर देखो—मेरे अग संचालन देखो । सुनो... मेरी भाषा सुनो। मेरी वाणी का लालित्य सुनो। मै कलाकार नही हूँ, ऐ !

सुन्दर—कृत्रिमता की साक्षात मूर्ति हो तुम...

नट—अभागे युवक, कला को कृत्रिम कहते हो !

सुन्दर—शायद यही तुम्हारी कला है क्यो ? क्या इसी कला के कारण तुम कलाकार हो !

नट—हाँ ।

सुन्दर—अच्छा ? (**हँसता है**)

नट—हँसो मत, प्रकृति पर विजय प्राप्त करके यथार्थ को कलामय करनेवाली मेरी इस कला को हँसते हो ?

सुन्दर—(**गम्भीर होकर**) इधर आओ। यहाँ बैठो (**नट पैंतरे से बैठता है**) इस प्रकार कलापूर्ण ढग से न बैठो, जरा आदमी की भाँति बैठो ।

नट—आदमी की भाँति ? कलाकार को आदमी बनने के लिए कहते हो ? तो फिर राह के मजदूर और रगमच के कलाकार मे अन्तर ही क्या रहा ! दीवाले रंगनेवाले रगसाज और तुम्हारे जैसे कलाकार मे अन्तर ही क्या रहा ! नही मै उस प्रकार नही बैठूँगा। मै आदमी जैसा नही बैठूँगा। मै कलाकार हू, आदमी नही .

सुन्दर—यह बात तुमने बिल्कुल ठीक कही। पर मै तुम्हे इन्सनो मे लाना चाहता हूँ, इस कृत्रिमता मे से खीचकर तुम्हे बाहर निकालना चाहता हूँ ।

नट—(**पैंतरा बदल कर**) नही ..नही,. .नही । प्रतिगामी युवक, मै पुरोगामी हूँ। जीवन से उत्पन्न होने वाले सघर्ष के नये ऐहसास की अनुभूति में से तुम मुझे पीछे खीचोगे !

सुन्दर—क्या कहा ?

नट—हाय ! तुम इतना भी नही समझते, ऐ ?

सुन्दर—मैं एक सीधा सादा आदमी हूँ। मेरी समझ में ऐसी कलात्मक भाषा नही आती। यह किसका वाक्य तुमने कहा था ?

नट—किसका ? हर ! हर ! कलाकार के अन्तरतम से प्रस्फुटित भावनाओ की उतुग लहरो की कलकल से प्रसारित होने वाली जीवन की सूक्ष्म विचेष्टाओ को व्यक्त करने के लिए किसी भी कलाकार को किसी अन्य की बेढगी भाषा अपनानी नही पडती।

सुन्दर—अब यही बात मनुष्य की साधारण भाषा मे तो कहो।

नट—हूँ (**विचार करता क्षण भर चुप रहता है**)।

सुन्दर—नही सूझता ? अच्छा मुझे एक बार और तो सुनाओ वह वाक्य। (**नट खडा होकर वही वाक्य अर्थानुरोधपूर्ण अभिनय करता हुआ दिखाता है**) ठीक ! अब सुनो। मैं मनुष्य की भाषा मे तुम्हे सुनाता हूँ। कलाकार का हृदय भावुक होता है। वह सब कुछ सहज ही जान जाता है। जो वह जानता है वह जचाने के लिए क्योकर दूसरे की भाषा का उपयोग करे ?

नट—फिर से कहो।

सुन्दर—सुनो। (**वह वाक्य फिर से दुहराता है**)।

नट—खूब ! अर्थ वही है पर शब्दो की वह झकार नही . भाषा सौष्ठव नही . भाषा का वैभव तो है ही नही। भाषा की सरलता की हद है फिर भी कला का जरा भी स्पर्श नही।

सुन्दर—बाजे गाजे और नगाडो की दनादन नही। केवल बासुरी का सुरीला गान !

नट—हूँ ! पर नगाडो की उस दनादन मे जो सौन्दर्य है जो कला का परमोच्चाक पूरा किया गया है . वह बासुरी मे नही। बासुरी मीठी हो सकती है .मधुर हो सकती है बासुरी के शब्द से मतवाला साप डोल सकता है...पर दनादन . कला की दनादन वास्तविकता पर

विजय पाने वाली कला की खनाखन .वह निनाद वह झकार. .तुम्हारी इस बासुरी मे नही !

सुन्दर—यह बात है ! तो आओ हम लोग यही देखे ।

नट—पर ठहरो, तुम्हें धन्यवाद देने के लिये मै आया हूँ ।

सुन्दर—अभी रहने दो। पहले हम लोग जरा कला पर चर्चा कर ले। **(कल्याणी आती है)** आओ कला, अभी हमारी कला पर ही चर्चा चल रही है, समझी ! इसे कला का बडा अभिमान है । कह सकते हो वह फिर से वाक्य ?

नट—फिर से ? **(चिल्ला कर)** मेरा अपमान करते हो ? ऐ ? मेरा अपमान करते हो ? मै नट हूँ। एक ही वाक्य हज़ार बार, हजार रात, हजारो लोगो के सामने उच्चारने में भी जो गलती नही खाता, जिसका उच्चारण जिसके विक्षेप और प्रक्षेप तनिक भी नही बिगडते उसी से पूछ रहे हो कि फिर कह सकते हो या नही ? धिक्कार है ! धिक्कार है ! ! धिक्कार है तुम्हे ! ! ! **(रजनी और रमणी प्रवेश करती है। एक के हाथ में आधी काटी हुई तरकारी की गड्डी और दूसरी के हाथ में धुले हुए चावलो का पात्र है)**

रजनी
रमणी } . क्या हुआ ?

रजनी—आग वाग लग गई क्या ? क्या हुआ ?

सुन्दर—धन्यवाद देने के लिए आया और बिचारा धिक्कारने लगा।

नट—क्यो न धिक्कारूँ ? मेरी कला का अपमान !

सुन्दर—मैं तुम्हारा अपमान नही करता और न तुम्हारी कला का अपमान करता हूँ। तुम नट हो, हो न ? जिस प्रकार के अभिनय की योजना लेखक ने की हो तुम्हे वही करके दिखानी होती है। समझ लो किसी मूर्ख लेखक ने किसी मुझ जैसे पात्र का निर्माण किया और दुर्भाग्य से उसका अभिनय करना तुम्हारे मत्थे पडा ।

नट—ऐसा होता है बार-बार होता है पग-पग पर होता है, पर

हम सम्भाल लेते हैं। हम उस लेखक की नही सुनते . स्वय प्रेरित भावना से अन्त करण से जो उद्रेक होगा ।

सुन्दर—ठहरो, ठहरो, ठहरो। जरा आदमियो में आओ। पर पहले तुम्हारी महिमा मुझे इन्हे सुना लेने दो। सुना रजनी, और तुमने भी, मैंने यूँ ही गलती से कहा, इसने कुछ बडी क्लिष्ट सी बात कही थी। मैंने कहा, 'यह किसका वाक्य है ?' तो क्रुद्ध हुआ और इसने कहा... क्या कहा जी ?

(नट पहले वाला वाक्य एक सॉस मे कह दिखाता है)

सुन्दर—तुम्हारी समझ मे आया ? नही ? अच्छा अब ऐसा करो, तुम्हारा दम साधने का अभ्यास मुझे पता लग गया। अब जरा ठडे दिल से कहो। **(नट ताल और लय मे बोलता है और वाक्य के अन्त में दम फूल जाने के कारण एक दम कुर्सी पर बैठता है)**

सुन्दर—**(नट से)** समझे ? **(नट एक प्रदीर्घ निश्वास छोडता है)** और तुम लोग ? समझी या नही ?

कल्याणी—शब्द समझ मे आये अर्थ समझ में नही आया ।

रजनी—शब्द सुनाई दिये बस !

रमणी—मेरी तो कुछ भी समझ मे नही आया ।

सुन्दर—अब मै बताता हूँ। इस सारे क्लिष्ट वाक्य का साराश इतना ही है **(नट से)** अब जैसा मै बताता हूँ वैसा तो कहो ।

(सुन्दर अपना पहले वाला वाक्य कह दिखाता है)

नट—यह कला नही झझट बाजी है ।

सुन्दर—यह कल्पना अभी रहने दो, मैने कहा न तुम से कि ऐसे एक पात्र का निर्माण किया गया है, ऐसे मुझ जैसे ऐसे समझा कर तो दिखाओ। **(सुन्दर वाक्य सिखाता है। नट कहता है। बाद में स्वतंत्र रूप से वाक्य कहता है)**

नट—ऊँ हुँ, यह नही बनता। अग विक्षेप के लिये स्थान नही है ।

पैतरे नही बदले जा सकते, यह बिल्कुल घरेलू बोलना लगता है। नही। ऊँ, हुँ,।

सुन्दर—बहुत मुश्किल है क्यो ? मनुष्यता इतनी ही कठिन है। कला का मतलब मनुष्यता है प्रकृति का नग्न स्वरूप है। कला का मतलब आभूषणो से लदी हुई कामिनी नही।

नट—पर अभिनय अभिनय क्या है ?

सुन्दर—अभिनय क्या है ? अभिनय का अर्थ है जैसे को वैसा दिखाना, जो नही है वह दिखाना नही। प्रकृति का स्वाभाविक स्वरूप .. देहाती नाई के आइने मे की विकृति नही।

नट—यही मै तुमसे सहमत नही।

सुन्दर—अब कैसे आदमियो जैसे बोले।

नट—आदमियो जैसा, ऐ ! मै आदमी नही हूँ ?

कल्याणी—यह ठीक है। आदमी के कोई लक्षण आप मे नही दिखाई देते।

रजनी—क्यो जी आप का विवाह हो गया है ? पूछने के लिए क्षमा कीजिए।

सुन्दर—यह विवाहित है। तुम्हे इससे डरने की जरूरत नही।

नट—विवाह ही नही, चार बच्चे भी हैं मुझे।

रजनी—आपके बच्चे आपसे डरते नही ?

नट—क्यो डरे ! मै उनका बाप हूँ। बडे होशियार है मेरे बच्चे।

रजनी—और आप की पत्नी ?

नट—वह भी बडी भावुक और स्नेह शील है। उसे मुझ पर बडा नाज़ है।

रजनी—क्या आप उससे इसी तरह बाते करते हैं ?

नट—(**घबरा कर**) इसी तरह ? इसी तरह यानी ?

रजनी—यानी जैसे अब बोल रहे हैं ऐसे ?

नट—(**घबरा कर**) हाँ !

रजनी—और वह उस समय का बोलना ? कलाकार का बोलना ? उस तरह क्यो नही बोलते आप उसके साथ ?

नट—वह घर है, रगभूमि नही।

सुन्दर—सुनो रजनी, सुनो कल्याणी घर रगभूमि नही .और रग-भूमि भी घर नही। (**नट से**) यही न ?

नट—हॉ क्या कहा ?

सुन्दर—कला और वास्तविकता का अन्तर देख रहा था मैं। कला यानी रगभूमि और वास्तविकता यानी घर, यही तो तुम्हारा कहना है न ?

नट—हॉ।

सुन्दर—यानी जो घर मे दिखाई देता है वह रगभूमि पर नही दिखाई देता, तो क्या रगभूमि घर का बिगडा रूप है ?

नट—अप्रबुद्ध कलाकार ..

सुन्दर—ठहरो ..घर में आओ। यह रगभूमि नही है। घर के आदमियो सा बोलो। घर मे जैसे पत्नी के साथ बोलते हो वैसे बोलो। बच्चो से बोलते हो वैसे बोलो। बीबी बच्चो की बातें चल ने पर जैसे अभी बोल रहे थे वैसे बोलो। (**नट एक निश्वास छोड़कर नीचे बैठ जाता है**) देखा रजनी, यह हो रहा है, दभ का मोल है। स्वाभाविक जीवन किसी को नही जचता। यही हमारी चित्रकला मे चल रहा है। हमारी कला से मनुष्यता अदृश्य हो रही है। (**कृष्णा फ्रेम लिये प्रवेश करता है**) वह आया एक कलाकार, कहाँ चले गये थे तुम कृष्णा ?

कृष्णा—पागल है दुनिया। गोप्या को दिखाया ..गन्या को दिखाया ...धोड्या को दिखलाया. किसी की भी समझ मे नही आया। काश देवता की तस्वीर ही होती !...पर यहाँ क्या है। केवल छपे हुए अक्षर वर और वे भी अग्रेजी। पढे नही जाते। धोड्या बालबोध पढता है। उसने कहॉ इसका बालबोध कर के ले आओ। मालिक, आप के साठ-पेसठ रुपये फिजूल गये।

सुन्दर—नही भई। ये रुपये भुनाने तुम रामू नौकर के पास गए।

हनुमान को मणि दिखाने गए। उनके लिए यह कागज क्या महत्त्व रखता है ? मणि की कीमत चौहरी जानता है।.. उन जौहरियो को आ जाने दो।

नट—यह क्या है ?

कृष्णा—इन्हे दिखाऊँ ?

सुन्दर—इसकी भी समझ में नही आयगा।

कृष्णा—(**नट से**) अग्रेजी आती है आप को ?

नट—क्या कहा ? तुम नही जानते ? मै लोकप्रिय नट हूँ...नट सम्राट् हूँ। अग्रेजी जाने बिना मै नट सम्राट् कैसे बन सकता हूँ ?

सुन्दर—फिर मनुष्यो मे से उठने लगे।

नट—देखूँ (**कृष्णा के हाथ से फ्रेम लेकर पढता है**) कृष्णा डेमा रामगडा, फैलो आफ दी रायल सोसायटी आफ आर्टस् ! क्या ? यह कृष्णा एफ० आर० एस० ए० है।

कृष्णा—किष्णा डेमा रामगडा ए फा रे शे । वाहरे मै ! तीन गिन्नियाँ खर्च की है साहब ..मैने नही.. इन मालिक ने। मैने नौकरी ही वैसी की है ..।

रमणी—सच है। जिन्दगी भर मालकियत चलाई अपने मालिक पर क्या उसका ऐहसान न उतारना चाहिए मालिक को !

नट—यह नौकर एफ० आर० एस० ए० ऐ ?

कल्याणी—क्यो न मिले उसे यह डिग्री ? तीन गिन्नी की बात है। कोई भी बन सकता है एफ० आर० एस० ए०...आप भी बन जाइए न एफ० आर० एस० ए०।

सुन्दर—क्या इन ऐसी खरीदी जाने वाली डिग्रियो के मापदड से मापी जायगी तुम कलाकारों की योग्यता ? क्या कला के प्रत्यक्ष प्रमाण की कही कीमत नही ! (**आथर प्रवेश करता है**)

ऑथर—(**नट से**) यहाँ बैठे थे ? सारा शहर छान डाला तुम्हारे लिए पर तुम्हे अपनी कला की कीमत है कहाँ ? चलो उठो। शिष्टमडल

में तुम्हारे न होने से सब कलाकरो की पूर्ति कैसे हो सकती है ?

नट—कैसा शिष्टमडल ?

ऑथर—जान जाओगे अपने आप। चलो उठो। **(वे दोनो जाने लगते है तभी कृष्णा उनके सामने आता है)**

कृष्णा—(ऑथर को फ्रेम दिखाते हुए) पहले यह तो देखिए।

ऑथर—मेरे पास अभी समय नही है।

सुन्दर—अजी देखो तो सही।

ऑथर—देखूँगा . देखूँगा देखने का समय आने पर देखूँगा। **(ऑथर, नट और कृष्णा जाते है)**

सुन्दर—देख लिया ? इतनी बडी डिग्री कृष्णा ने हासिल की है पर इन्हे उसकी कदर नही। और जानती हो यह काहे की धूमधाम चली है। मेरा स्वागत करने वाले हैं। यहाॅ रद्दी ठहराये गए मेरे चित्र पेरिस की प्रर्दशनी मे दिखाये गये इस बात का गौरव मान कर मेरा सम्मान करने वाले है। यह है बिलायती सिक्के की करामात। **(बाबूराव-आता है)**

बाबूराव—तुम यही हो न सुन्दरराव ? अभी आया था तब इनमे से कोई भी यहाॅ न थी। अब तुम सभी यहाॅ हो। अब तुम्ही बताओ यह इस प्रकार कब तक चलेगा ?

सुन्दर—उसी से पूछो न ?

बाबूराव—(रजनी से) मैं पूछ रहा रहा हूँ।

रजनी—मै सुन रही हूँ।

बाबूराव—फिर ?

रजनी—मुझे घर से निकाला गया है।

बाबूराव—ठीक है, पर अब मै ही बुला रहा हूँ।

कल्याणी—पहले क्यों निकाला और अब क्यो बुलाने आये हैं, क्या हमें यह नही जानना चाहिए !-

बाबूराव—मैं उससे कह रहा हूँ।

कल्याणी—वह अब यहाँ अकेली नही है। अब हम तीनो एक हैं, हैं न ?

बाबूराव—एक कहने से तीनो एक नही होती। मेरा विवाह एक ही से हुआ है। (**सब हँसते है**) हँसिये नही। मैं अपनी पत्नी से उत्तर चाहता हूँ।

रजनी—पहले क्यो निकाल दिया था मुझे ?

बाबूराव—उस दिन मेरी अवज्ञा की तुमने. नही आऊँगी कहा

रजनी—अब भी वही कहती हूँ।

बाबूराव—पर अब मे वैसा नही कह रहा हूँ। तुम्हे चलना है या नही ! (**रजनी कुछ नही बोलती**) मै फिर से पूछ रहा हूँ, तुम्हे चलना है या नही।

कल्याणी—मै कह रही हूँ वह नही आयगी।

बाबूराव—मै उससे उत्तर चाहता हूँ।

कल्याणी—जो मैने कहा वही उसका उत्तर है।

बाबूराव—(**सुंदर से**) तुम्हारा क्या विचार है ?

सुन्दर—मेरा इससे क्या सम्बन्ध है ?

बाबूराव—यह तुम्हारे यहाँ आकर रही है।

सुन्दर—इस तरह तो यह भी रही है वह भी रही है। मेरे आत्मीय जन मेरे यहाँ आकर रहे तो उन्हे ना कहने के लिए मैने अभी इतना गार्हस्थ्य धर्म नही छोडा है।

बाबूराव—यह बात है ? ठीक है। अब कानून क्या कहता है मुझे देखना है। (**जाता है**)।

सुंदर—(**क्षण भर बाद**) परेशान कर रखा है इस कायदे-कानून ने और रूढि ने ! रजनी जाओ तुम यहाँ से ..और तुम भी जाओ रमणी।

कल्याणी—(**क्षण भर बाद**) और मुझे कही जाने के लिए नही कहा ?

सुन्दर—तुम्हारे बारे मे कानून बीच मे नही आता।

रमणी—कानून से डर गये। मै बहन हूँ न तुम्हारी। मायके भी न आऊँ मै ?

सुंदर—पर कितने दिन ?

रमणी—वह मैने तय करना है।

सुदन्र—और यह ?

रजनी—मै आपकी शिष्या हूँ।

सुन्दर—अच्छा ! एक बहन. एक शिष्या .और यह तीसरी ? यह कौन है ?

कल्याणी—अमीर मा बाप ने घर से निकाली हुई एक निराधार भिखारिन ।

सुन्दर—पेरिस की प्रदर्शनी मे मेरे चित्र रखे गये इसलिये क्या तुम लोग मुझे अमीर समझने लगी हो ?

रजनी—यह हमने कब कहा ! अनाथो को आश्रय क्या केवल अमीरो का ही चाहिए होता है ?

सुन्दर—फिर किसका ?

रजनी —किसी का भी ! गरीबो का ख्याल गरीबो को ही होता है।

सुन्दर—यह बात है ? (**स्तब्धता**)

रमणी—काहे का विचार कर रहे हो दादा ?

सुन्दर—किस हद तक, कितना अविचार करना चाहिए, इसी का विचार कर रहा हूँ मै।

रमणी—फिर ?

सुन्दर—कुछ निश्चित नही कर पा रहा हूँ। विचार करके देख रहा हूँ। समझता हूँ कि ससार के अन्त तक यही विचार करते बैठना पडेगा मुझे ।

कल्याणी—अविचार करने के लिए विचार नही करना पड़ता।

सुन्दर—भूलती हो कला। जब विचार पूर्वक अविचार करना होता है तब बहुत विचार करना पडता है। यश की आशा हो तो अविचार से

अविचार करना योग्य नही। अविचार पौरुष का प्रमाण है पौरुष का सबूत है, व्यर्थ विचार करना स्त्रियो का लक्षण है, इन दोनो को मिला कर मनुष्यता कैसे निर्माण होती है यह देख रहा हूँ।

रजनी—क्या मनुष्यता ? इस मनुष्यता ने बहुत बुरी तरह से आप को जकड रखा है। यह लक्षण ठीक नही।

सुन्दर—सच है। वह मनुष्य मेरी दृष्टि के सामने है। सीग, दुम, दाढी मूँछ और स्तन वाला मनुष्य सब सर्वनामो से परे वाला मनुष्य ...उसने तग कर रखा है मुझे ! उसी की दृष्टि से अविचार करने वाला हूँ। (**बलवंतराव आता है**)

बलवन्त—बाबूराव हैं यहाँ ? नही है ?

सुन्दर—देख लीजिए न।

बलवन्त—मुझ से कहा यही जा रहा हूँ और यह तो अभी यही है।

कल्याणी—वे आकर चले गये है।

बलवन्त—इसे लिये बिना ?

कल्याणी—जी।

बलवन्त—मै वैसा नही जाऊँगा।

सुन्दर—अच्छी बात है। एक पत्थर कम हो जायगा मेरे गले से।

बलवन्त—(**रमणी से**) क्यो ? मै क्या कह रहा हूँ ?

कल्याणी—किससे ?

बलवन्त—इससे, अपनी धर्मपत्नी से।

रमणी—क्या ? क्या बात है ?

बलवन्त—कह रहा हूँ अब घर चलो।

रमणी—मै मायके आई हूँ।

बलवन्त—यह नैहर वास कब समाप्त होगा ?

रमणी—जब मै वापिस आऊँगी तब...।

वलबन्त—कब वापिस आओगी !

रमणी—नैहरवास समाप्त होते ही बहुत बडा आकर्षण होता है इस मायके का।

बलवन्त—क्यो जो भाई साहब, आपका क्या बिचार है ?

सुन्दर—मेरा इससे क्या सम्बन्ध है .. ?

बलवन्त—कितने दिन इसे यहाँ रखेगे ?

सुन्दर—उसके जाने तक।

बलवन्त—वह यहाँ से कब जाएगी ?

सुन्दर—उसी से पूछ लीजिए न ?

बलवंत—बडे दुष्ट लोग दिखाई पडते हैं आप ! एक भी ठीक से जवाब नही देता।

कल्याणी—जाइए न अब घर।

बलवन्त—जब आया था तब मैंने क्या कहा था ? इसेलिये बिना में यहाँ से नही जाऊ गा।

सुंदर—मेरे गले मे चौथा पत्थर पडा ! . अब वह बाबूराव भी शायद यही आकर रहेगा।

रजनी—जहाँ ये होगे वहाँ हम नही रहेगी।

सुंदर—तो ऐसा करो बलवन्तराव, उस बाबूराम को भी यही ले आओ। यही रहो तुम दोनो ..ताकि अपने आप ये पीडाये यहाँ से चली जायेगी।

बलवंत—और किसी को जाने की जरूरत नही। यह मेरे पास रहनी चाहिए।

कल्याणी—या आप इसके पास ! यानी दोनो एक जगह।

रमणी (
रजनी (अब वह सम्भव नही।

सुन्दर—यह तो बडा विकट प्रसग आ खडा हुआ है।

बलवन्त—प्रसग विकट तो है ही...फिर अब मै क्या करूँ ?

सुन्दर—वह आप लोग अपना देख लीजिए, मुझे चिन्ता है अपने

भोजन की। यह तरकारी यही पडी है। चावल यही है। ये तो सुनती नही, कृष्णा भी कही मुँह छिपा कर चला गया है, मै जाता हूँ अब चूल्हे की उपासना करने। (**तरकारी और चावल का पात्र लेकर अन्दर जाता है। रजनी, रमणी और कल्याणी कोने में कुर्सियाँ घुमा कर वर्तुलाकार बैठ जाती है**)।

बलवन्त—(**जोर से चिल्ला कर**) क्यो ? चलोगी या नही ?

कल्याणी—(**अपनी जगह से और जोर से चिल्लाकर**) हम कोई भी यहाँ नही हैं। हम यहाँ से चली गई है।

बलवन्त—अब क्या कहा जाय इनसे। (**विश्वासराव आता है**) अच्छा हुआ जो आप आ गये।

विश्वास—यही हो न ? अच्छा हुआ। थक गया मै ढूँढते-ढूँढते ! यह मुझे पहले जानना चाहिए था कि दाँवरी पर गाय होने से बैल वही जायगा। (**ऑथर, कवि, बाबूराव और कुछ अन्य लोग हाथ मे हारो की टोकरी लिए आते है**) **नट खाली हाथ आता है। कृष्णा सबसे पीछे हाथ में फ्रेम लिए आता है, सबके बीच मे से होकर आगे आता है**)।

कृष्णा—(**उन्हे रोकते हुए**) हाँ, यही खडे रहिये। आगे न बढना, मेरा हुक्म है।

विश्वास—अच्छा ! अच्छा ! तुम्हारे मालिक कहाँ हैं ?

कृष्णा—(**इधर-उधर देखकर**) अरे वाह ! यही तो थे। कहाँ गए ! कोई भी नही दिखाई देता यहाँ, और वे औरते कहाँ गई ?

(**हाथ में चावल का पात्र लिए सुन्दर अन्दर से बाहर निकलता है उसने आस्तीने चढ़ाई हुई है। धोती ऊपर खोसी हुई है। शायद वह अन्दर पात्र में चावल घोट रहा था।**)

सुन्दर—यह क्या गडबड है ?

(**विश्वासराव एक व्यक्ति के हाथ से टोकरी लेकर उसमें से एक हार निकाल कर सुन्दर के सामने आता है**)।

विश्वास—समग्र कलाकारो का यह शिष्टमडल आपको गौरवान्वित

करने के लिए यहाँ आया है। उसकी ओर से यह हार. . ।

आँथर—ठहरिये. (**विश्वासराव को पीछे ठेलकर हार लिये स्वय आगे आकर**) पेरिस की प्रदर्शनी में आपके चित्रो को स्थान देकर आपका जो सम्मान पेरिस न किया और उसके कारण विदेश मे भारत का नाम उज्ज्वल करने में आप जो समर्थ हुए, उसके लिए अखिल भारतीय साहित्त समिति की ओर से मै यह हार ।

सुन्दर—ठहरो। मुझ से भी अधिक सम्मान पाने योग्य एक महान् व्यक्ति यहाँ होते हुए (**कौन-कौन कहकर सारे चिल्ला पड़ते है।**) एफ० आर० एस० ए० की उपाधि से जिसे विभूषित किया गया है वह है यह ।

कृष्णा—मै कृष्णा डेमा रामगडा, ए—फा—रे—से।

सुन्दर—यह (**कृष्णा प्रेम दिखाता है। नट के अतिरिक्त सभी एक दूसरे के हाथ से वह लेकर देखते हैं**)

विश्वास— यह कृष्णा एफ० आर० एस० ए० है ?

सुन्दर—क्यो न हो ! केवल तीन गिन्नियो की बात है।

बलवन्त—तीन गिन्नियो की बात है। तो यह डिग्री नही है ?

सुन्दर—आप ही देख लीजिए। हाँ विश्वासराव अब वे हार डालिए कृष्णा के गले में। (किसी एक के हाथ से हार लेकर कृष्णा के गले मे डालना है। उसकी देखा-देखी एक-एक व्यक्ति टोकरी मे से हार कृष्णा को पहनाने लगता है)

विश्वास—अरे तुम लोग यह क्या कर रहे हो ! हम लोग सुन्दर-राव के सम्मान के लिए न आये थे ? सुन्दरराव, अपने अखिल भारतीय कला मडल की ओर से मै यह हार—

सुन्दर—ठहरिये। किस लिए हो रहा है यह मेरा सम्मान ?

विश्वास—पेरिस की प्रदर्शनी मे आपके चित्र. ।

सुन्दर—और यहाँ की प्रदर्शनी में ?

विश्वास—छोडिये भी उसे।

सुन्दर—वही मेरे चित्र फेक दिये गए थे। आप लोगो ने मेरी

अवहेलना की । मुझे उपदेश दिया कि अच्छे चित्र की भाँति चित्र बनाया करूँ । वही हैं न आप लोग ?

विश्वास—पर अब पेरिस की प्रदर्शनी मे ..।

सुन्दर—पेरिस की प्रदर्शनी में कुछ भी हुआ । लेकिन यहाँ ! मेरी इस मातृभूमि के कलाकारो ने क्या कीमत लगाई मेरे चित्रो की । फेक दिये । मेरे देश की प्रदर्शनी में दिखाये जाने के लिए वे अयोग्य ठहराए गए, और अब जब सात समुद्र पार के लोगो ने मेरी तारीफ की, तब आप लोग हार लेकर स्वागत के लिए दौडे आए हैं ।

आँथर—(**नट से**) अरे तुम बोलो न ! जोर से भाषण देना ।

नट—(**आगे आकर स्वाभाविक भाषा में**) देख लिया सुन्दरराव मै हार लेकर नही आया—

आँथर—इसे क्या हो गया ?

नट—मै हार लेकर नही आया । क्यो ? मै भी एक कलाकार हूँ । मेरी कला की भी इसी प्रकार उपेक्षा हो रही है । मेरी कला को कला कहने के लिए भी कोई तैयार नही । किन्ही पराये नटो के अनुकरण से हम अभिनय मे बनावटीपन लाये । वह बनावटीपन हमे महसूस हो रहा था...पर जब उसी बनावटीपन को ससार चाहने लगा तब उस बनावटीपन को हम कला कहने लगे । पेट भरना था न हमे ! बीबी बच्चो के कबीले को भी अन्न देना था .इसी तरह कीर्ति के दाने पर ससार मे रहना था । इस गृहस्थी ने हमारा घात किया । पेट भरने के लिये हमे बनावटीपन का प्रपच रचना पडा ।

आँथर—बस-बस बन्द करो । किसने तुम्हे यह बेवकूफी सिखाई ?

नट—(**सुन्दरराव की ओर अंगुली दिखाकर**) इन्होने ।

कवि—खटमल के साथ के कारण हीरा टूट गया !

आँथर—सुन्दरराव, मुझे हृदय से आप पर गर्व हो रहा है—

सुन्दर—सब बनावट का बाजार है । दूसरो की बुद्धि से जीने वाले 'निर्बुद्धो के पुतलो तुम्हारा यह सम्मान भी मेरा अपमान है ।

निकल जाओ यहाँ से सब के सब। उस समय के तुम्हारे वे जूते और अब के ये हार, मेरे लिये दोनो बराबर हैं। मुझे तुम्हारी यह स्तुति भी नही चाहिए और निन्दा भी नही चाहिये। समझे? चले जाइये यहाँ से चले जाइये। (**एक-एक को धक्का मार कर बाहर निकालता है**)

नट—(**एक ओर बचा हुआ**) क्षमा कीजिए। मुझे जबर्दस्ती लाये ये लोग अपने साथ—

सुन्दर—(**उसकी पीठ ठोक कर**) जाओ, बाबा, जाओ। जग पड़े हो तो उसे सार्थक करो। (**नट नमस्कार करके जाता है**) (**कृष्णा से**) और तुम भी जाओ जी इन हारो का बोझा लेकर। एक गधे का बोझा है यह। फेक दो नाले मे। या ऐसा करो कि पडौस मे माली को आधी कीमत में दे दो ये हार। .तुम्हारा एक सप्ताह का खर्चा निकल आयेगा। (**कृष्णा हार लेकर जाता है**) ये लडकियाँ कहाँ गई? (**तीनो उठ कर सामने आती हैं, सुन्दर जोर से हँसता है।**) इतनी गडबड होते हुए भी औरत जात चुपचाप बैठी रह सकती है, क्यो?

रमणी—अब तुम्ही देख लो।

सुन्दर—पतियो से डर गई? अब वे चले गये—(**बलवन्तराव, बाबूराव प्रवेश करते है**)

बलवन्तराव—
बाबूराव— } नही इन्हे लिये बिना अब हम लोग नही जायेगे।

(**दोनो जमीन पर बैठ जाते है**)

सुन्दर—देखो रजनी, यहाँ तुमने भूल की, तुम्हे आर्टिस्ट बनना था तो तुम्हे स्वतन्त्र रहना चाहिये था। गिरस्ती का बोझा सिर पर लाद कर कला की उपासना नही होती। यह कला अब छोड दो। विवाह कर चुकी हो .कानून से बँध गई हो, अब तुम्हारे लिए दूसरा मार्ग नही है। बाबूराव इधर आइये। यह लीजिये अपनी पत्नी और यहाँ से जाइये दोनो। कह रहा हूँ न जाओ! नही तो धक्के मारकर बाहर निकाल दूँगा दोनो को।

(रजनी का हाथ पकड कर बाबूराव उसे खीचता हुआ ले जाता है)

रमणी—(क्रोध से सुन्दर की ओर देखती हुई) अब मेरे ऊपर नौबत न आये ! भाई कहलाता है भाई ! देख ली खून की ममता। हर कोई अपना स्वार्थ देखता है. और मै तो आर्टिस्ट नही। **(बलवन्तराव से)** सुना ? उठिये घर चलना है न ? **(बलवन्तराव उठकर उसकी ओर देखकर हँसता है। दोनो हाथ में हाथ डाले हुए जाते हैं और जाते समय सुन्दर की ओर देखकर मुह बनाते है। सुन्दर जोर-जोर से हँसने लगता है हँसी उससे रोके नही रुकती।)**

कल्याणी—इतना हँसने के लिये क्या हुआ ? यही है वह मनुष्यता ? कितनी मनुष्यता की बढाई कर रहे थे आप ? —क्या मनुष्यता का अर्थ निर्दयता है ? क्या दया ममता कुछ भी नही है आपकी इस मनुष्यता मे ?

सुन्दर—क्यो ? क्या हुआ ? उन्हे निकाल क्यो दिया ?

सुन्दर—सभी को निकाल दिया मैने।

कल्याणी—उन्हे नही, रजनी और रमणी को।

सुन्दर—पर वे चली जो गईं अभी !

कल्याणी—आपने उन्हे निकाला, जबर्दस्ती निकाल दिया—

सुन्दर—पर वे चली गई। बाबूराव बलवन्तराव की भाँति आसन जमाकर नही बैठीं। **(क्षण भर स्तब्धता)** बडी विकट है यह विवाह की फाँसी ! सारी कला का गला घुटता है इसके कारण। मेरी बात सुनो यह फाँसी न लगा लो। उपासना मे व्यभिचार के लिये स्थान नही। एक कला या फिर गिरस्ती ! एक साथ दोनो की उपासना करना शक्य नही। सब सबक ले लिये हैं मैने और तय किया है ।

कल्याणी—क्या तय किया है ?

सुन्दर—कि अब जीवित रहूँगा तो एक कला के लिए।

कल्याणी—मेरे लिए ?

सुंदर—अपनी कला के लिए। जिस कला के कारण मेरी विडबना हुई, जिस कला के कारण विडबना से भी अधिक दु सह मेरा सम्मान

हुआ, उस अपनी इकलौती कला के लिए . कला के व्यापक जीवन के लिये . एक व्यक्ति के लिए नही ! जाओ, कला, बेटा, जाओ । जितना सम्भव हो सके दूर रहो । ठीक क्षितिज की सीमा रेखा पर रहो । तुम्हारी प्राप्ति के लिए मै धीरे-धीरे कदम बढाता उस सीमा तक पहुँचूँगा । अब जाओ ।

(एकक्षण भर ही कला सुन्न होकर खड़ी रहती है और तत्पश्चात् जाने लगती है । वह धीरे-धीरे बाहर जाती है । क्षण भर उसके पीछे-पीछे जाने की वृत्ति सुंदर में दिखाई पड्ती है . पर दूसरे ही क्षण वह संयत होकर खडा रहता है ।)

सुंदर—अकेला अब मै अकेला अपनी कला के लिये मै अकेला !

—: समाप्त :—